RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 029
दि. 01.11.2025,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.
Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com

पवई बंधक कांड में सनसनीखेज खुलासे — रोहित आर्य ने रचा था सुनियोजित षड्यंत्र, स्टूडियो को बनाया था जाल, शिक्षा विभाग से मांगी गई रिपोर्ट

(जीएनएस)। मुंबई। पवई के आरए स्टूडियो में बच्चों और वयस्कों को बंधक बनाने वाले आरोपी रोहित आर्य के मामले में पुलिस जांच में कई नए और चौंकाने वाले खुलासे सामने आए हैं। पुलिस ने बताया कि आर्य ने इस घटना की पूरी योजना पहले से तैयार कर रखी थी। उसने स्टूडियो के दरवाजों और खिड़कियों पर मोशन सेंसर लगाए थे ताकि किसी की भी हलचल का तुरंत पता चल सके, और सभी सीसीटीवी कैमरों को एक ही दिशा में घुमा दिया था जिससे अंदर की कोई गतिविधि रिकॉर्ड न हो सके। गुरुवार को तीन घंटे तक चले इस बंधक संकट का अंत पुलिस मुठभेड़ में हुआ, जिसमें 50 वर्षीय आर्य मारा गया।

राज्य के मंत्री दादा भुसे ने शुक्रवार को कहा कि उन्होंने शिक्षा विभाग से आर्य और उसकी कंपनी 'अप्सरा एंटरटेनमेंट नेटवर्क' द्वारा किए गए काम की पूरी रिपोर्ट मांगी है। इस कंपनी ने 'स्वच्छता मॉनिटर पहल' और 'लेट्स चेंज' जैसे प्रोजेक्ट चलाए थे, जिनसे 64,000 स्कूलों और करीब 59 लाख छात्रों को जोड़ा गया था। आर्य ने दावा किया था कि उसे शिक्षा विभाग की परियोजनाओं का भुगतान नहीं मिला, जिसके कारण वह आर्थिक रूप से टूट गया था। मंत्री भुसे ने कहा कि इस घटना की गहन जांच के आदेश दिए गए हैं ताकि पता लगाया जा सके कि आर्य के शिक्षा विभाग से किस प्रकार के आर्थिक और प्रशासनिक संबंध थे।

इस पूरे मामले में अब यह स्पष्ट होता जा रहा है कि आर्य ने न सिर्फ एक हिंसक कदम उठाया बल्कि यह सब एक सुनियोजित स्क्रिप्ट की तरह अंजाम दिया। पुलिस अधिकारी ने बताया कि जब बचाव दल बाथरूम की खिड़की के रास्ते अंदर घुसा, तो उन्हें उन सेंसरों का पता चला जो हर हलचल को पकड़ते थे। यह तकनीक आर्य ने खासतौर पर इस घटना से पहले लगवाई थी। उसने ऑडिशन के नाम पर बच्चों को बुलाया था, और 10 से 12 साल की उम्र के 17 बच्चे तथा दो वयस्क उसके चंगुल में फंसे थे।

वीडियोग्राफर रोहन अहीर, जो पिछले दस सालों से आर्य के साथ काम कर रहे थे, इस घटना के प्रत्यक्षदर्शी हैं। उन्होंने बताया कि आर्य ने बुधवार को कहा था कि वेब सीरीज के ऑडिशन खत्म हो गए हैं, लेकिन अचानक अगले दिन फिर से शूटिंग के बहाने बच्चों को बुला लिया। आर्य ने उनसे पेट्रोल और पटाखे लाने को कहा था, लेकिन अहीर ने बच्चों की मौजूदगी की वजह से ऐसा करने से इनकार कर दिया। गुरुवार सुबह जब

वह स्टूडियो पहुंचे, तो एक स्पॉट बॉय ने बताया कि ऊपर किसी को जाने की अनुमति नहीं है। थोड़ी देर बाद आर्य नीचे आया और कहा कि वह आग का सीन शूट करेगा। उसने रसायन की बोतलें लाई थीं और अहीर को दरवाजे बंद करने का आदेश दिया।

अहीर ने जब उसे रोका, तो आर्य ने एयर गन तान दी और बच्चों के सामने आग लगा दी। अहीर ने भागकर बाहर के लोगों को सूचना दी और खुद एक हथौड़े से खिड़की तोड़कर बच्चों को निकालने की कोशिश की, लेकिन इस दौरान आर्य ने उनकी आंखों में मिर्च स्प्रे कर दिया। घायल अहीर ने एक बुजुर्ग महिला मंगला पाटनकर और कुछ बच्चों को बाहर निकालने में मदद की। पुलिस ने तुरंत स्टूडियो को घेर लिया और बातचीत शुरू की, लेकिन स्थिति बिगड़ने पर गोलीबारी हुई जिसमें आर्य मारा गया।

घटना की चश्मदीद बुजुर्ग महिला मंगला पाटनकर, जो अपनी पोती को ऑडिशन के लिए लाई थीं, ने बताया कि आर्य शुरू में बहुत शांत और सहयोगी दिखाई दे रहा था, लेकिन धीरे-धीरे उसने एक अजीब व्यवहार दिखाना शुरू कर दिया। उसने कहा कि बाहर गोलीबारी हो रही है, इसलिए कोई भी बाहर न जाए, और बच्चों को डराने के लिए पटाखे फोड़ने लगा। मंगला ने बताया कि उन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर बच्चों को संभालने की कोशिश की, इसी दौरान कांच के टुकड़ों से उनके सिर में चोटें आईं।

पूर्व शिक्षा मंत्री दीपक केसरकर ने भी स्वीकार किया कि उन्होंने एक समय आर्य को आर्थिक सहायता दी थी क्योंकि वह सरकारी भुगतान में देरी से परेशान था। हालांकि, अब यह सवाल उठ रहा है कि आखिर किस मानसिक स्थिति या दबाव के चलते एक समाजसेवी और 'स्वच्छता अभियान' चलाने वाला व्यक्ति इतनी भयावह हरकत करने तक पहुंच गया।

पुलिस का कहना है कि आर्य की कंपनी द्वारा चलाए गए शिक्षा परियोजनाओं की गहराई से जांच की जाएगी। यह भी देखा जाएगा कि कहीं इन अभियानों में वित्तीय अनियमितता या धोखाधड़ी तो नहीं हुई थी। जांच में यह बात सामने आई है कि आर्य लंबे समय से आर्थिक संकट से जूझ रहा था और हाल के महीनों में उसकी मानसिक स्थिति भी अस्थिर थी।

मुंबई पुलिस आयुक्त ने कहा कि "यह सिर्फ एक अपराध नहीं बल्कि एक मनोवैज्ञानिक रूप से जटिल मामला है। आरोपी ने अपने अतीत, असफलताओं और सामाजिक असंतोष को मिलाकर इस पूरी घटना को अंजाम दिया। फिलहाल सभी बंधक सुरक्षित हैं और जांच कई दिशाओं में आगे बढ़ रही है।"

पवई बंधक कांड अब राज्य सरकार, शिक्षा विभाग और मनोरंजन जगत के लिए एक गंभीर चेतावनी बन गया है—कि कैसे सामाजिक अभियानों और फिल्म निर्माण के बहाने कुछ लोग अवैध गतिविधियों और मानसिक अस्थिरता की आड़ में खतरनाक घटनाओं को जन्म दे सकते हैं।

लद्दाख के पर्यावरण योद्धा सोनम वांगचुक बने टाइम मैगजीन के 100 सबसे प्रभावशाली जलवायु नेताओं में शामिल

(जीएनएस)। नई दिल्ली। लद्दाख के प्रसिद्ध इंजीनियर, शिक्षाविद और पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को टाइम मैगजीन ने अपनी प्रतिष्ठित सूची 'द 100 मोस्ट इंफ्लुएंशियल क्लाइमेट लीडर्स ऑफ 2025' में शामिल किया है। यह सूची वैश्विक स्तर पर उन व्यक्तित्वों को सम्मानित करती है, जिन्होंने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए असाधारण योगदान दिया है। वांगचुक को यह सम्मान हिमालयी पारिस्थितिकी के संरक्षण और नवाचारपूर्ण जल प्रबंधन तकनीकों के विकास के लिए दिया गया है। टाइम मैगजीन ने अपने लेख में लिखा कि सोनम वांगचुक ने लद्दाख जैसे संवेदनशील हिमालयी क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन से उपजी चुनौतियों का सामना करने के लिए स्थानीय ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का अद्भुत संयोजन किया है। वे अपने 'आइस स्तूप' (कृत्रिम ग्लेशियर) प्रोजेक्ट के लिए जाने जाते हैं, जिसने सूखाग्रस्त इलाकों में जल संरक्षण की दिशा में नई क्रांति ला दी। यह तकनीक बर्फ को ऐसे आकार में संरक्षित करती है कि वह धीरे-धीरे पिघलती है और गर्मियों में खेतों को आवश्यक पानी उपलब्ध कराती है।

हालांकि, यह सम्मान ऐसे समय में आया है जब सोनम वांगचुक हाल ही में सुर्खियों में रहे। पिछले महीने उन्हें लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा देने और पारिस्थितिक संरक्षण की मांग को लेकर किए गए शांतिपूर्ण प्रदर्शन के दौरान गिरफ्तार किया गया था। इस गिरफ्तारी के बाद देशभर में उनके समर्थन में आवाज़ें उठीं। वांगचुक की पत्नी ने X (पूर्व ट्विटर) पर लिखा — "टाइम मैगजीन उन्हें दुनिया के 100 प्रभावशाली लोगों में शामिल कर रही है, जबकि हमारी सरकार उन्हें एंटी-नेशनल बता रही है। यही हमारे समय का सबसे बड़ा विरोधाभास है।" सोनम वांगचुक का नाम केवल भारत में ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में एक प्रेरणा बन चुका है। उन्होंने 'स्टूडेंट्स एजुकेशनल एंड कल्चरल मूवमेंट ऑफ लद्दाख (SECMOL)' की स्थापना की, जो स्थानीय युवाओं को व्यावहारिक शिक्षा और आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रशिक्षित करता है। उन्होंने लंबे समय से हिमालयी पारिस्थितिकी की नाजुकता, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, और अत्यधिक निर्माण गतिविधियों से क्षेत्र के पर्यावरणीय संतुलन को हो रहे नुकसान के खिलाफ आवाज उठाई है। उनके नवाचारों ने यह साबित किया है कि स्थायी विकास तभी संभव है जब विज्ञान और संस्कृति साथ-साथ चलें। विशेषज्ञों के अनुसार, टाइम मैगजीन द्वारा सोनम वांगचुक को यह सम्मान दिया जाना भारत के लिए गर्व की बात है।

भारत-अमेरिका रक्षा साझेदारी में नई छलांग: राजनाथ सिंह और अमेरिकी रक्षा मंत्री पीटर हेगसेथ ने 10 वर्षीय समझौते पर किए हस्ताक्षर

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत और अमेरिका के बीच रक्षा सहयोग को नए आयाम पर ले जाने वाला ऐतिहासिक कदम शुक्रवार को उठाया गया। दोनों देशों ने अगले दस वर्षों के लिए एक व्यापक रक्षा फ्रेमवर्क समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं, जो वर्ष 2025 से 2035 तक लागू रहेगा। यह समझौता कुआलालंपुर में हुई बैठक के दौरान भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और उनके अमेरिकी समकक्ष पीटर हेगसेथ के बीच संपन्न हुआ। इस समझौते को दोनों देशों की रणनीतिक साझेदारी को और अधिक मजबूत करने की दिशा में मील का पत्थर माना जा रहा है। रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी बयान के अनुसार, इस समझौते का नाम "अमेरिका-भारत प्रमुख रक्षा साझेदारी की रूपरेखा" रखा गया है। इसका उद्देश्य आने वाले दशक में रक्षा उद्योग, सैन्य प्रशिक्षण, तकनीकी नवाचार, और सामरिक सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों में संयुक्त रूप से काम करना है। हालांकि, समझौते की विस्तृत शर्तों और बिंदुओं को सार्वजनिक नहीं किया गया है, लेकिन सूत्रों के मुताबिक यह रक्षा उत्पादन, साइबर सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित रक्षा प्रणाली, और नौसैनिक सहयोग जैसे क्षेत्रों को शामिल करेगा। राजनाथ सिंह इन दिनों आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक-प्लस (ADMM-Plus) में भाग लेने के लिए कुआलालंपुर में हैं। इसी अवसर पर हुई द्विपक्षीय बैठक के दौरान दोनों

मंत्रियों ने भारत-अमेरिका रक्षा साझेदारी की प्रगति की समीक्षा की। बैठक को अत्यंत रचनात्मक और सकारात्मक बताया गया। दोनों नेताओं ने रक्षा उद्योगों के बीच सहयोग, संयुक्त अभ्यासों के विस्तार, और रक्षा प्रौद्योगिकी में नवाचार को लेकर साझा प्रतिबद्धता जताई। बैठक के बाद जारी संयुक्त बयान में कहा गया कि भारत और अमेरिका आने वाले वर्षों में क्षेत्रीय और वैश्विक शांति बनाए रखने में एक मजबूत साझेदार के रूप में कार्य करेंगे। दोनों देशों ने इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में स्थिरता, समुद्री सुरक्षा, और आतंकवाद-रोधी अभियानों में सहयोग बढ़ाने पर भी सहमति व्यक्त की।

गौरतलब है कि हाल के महीनों में भारत-अमेरिका संबंधों में टैरिफ और व्यापारिक मतभेदों को लेकर कुछ तनाव देखने को मिला था। ऐसे समय में यह रक्षा समझौता दोनों देशों के बीच विश्वास और रणनीतिक एकजुटता का मजबूत संकेत देता है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यह 10 वर्षीय समझौता न केवल दोनों देशों की रक्षा नीति को दिशा देगा, बल्कि 'मेक इन इंडिया' पहल के तहत भारत की स्वदेशी रक्षा उत्पादन क्षमता को भी नई गति प्रदान करेगा। साथ ही, अमेरिकी रक्षा प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण से भारतीय सेना को अत्याधुनिक उपकरणों और प्रणालियों की उपलब्धता सुनिश्चित होगी। इस तरह, कुआलालंपुर में हुआ यह समझौता भारत-अमेरिका संबंधों में एक नया अध्याय जोड़ता है — जहां रणनीतिक सहयोग केवल रक्षा तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि आने वाले दशक में विज्ञान, तकनीक और सुरक्षा के क्षेत्रों में भी नई संभावनाओं के द्वार खोलेगा।

गुजरात में हिट एंड रन का सनसनीखेज मामला: नशे में धुत शिक्षक ने बाइक सवार को 4 किलोमीटर तक घसीटा, दो गंभीर घायल

(जीएनएस)। नई दिल्ली। गुजरात के महिसागर जिले से इंसानियत को झकझोर देने वाला हिट एंड रन का एक दिल दहला देने वाला मामला सामने आया है। हलोल-शामलाजी हाईवे पर हुई इस घटना में एक शराबी शिक्षक ने तेज रफ्तार कार से बाइक को इतनी जोरदार टक्कर मारी कि बाइक सवार कार के नीचे फंस गया और आरोपी ने उसे करीब चार किलोमीटर तक घसीटते हुए ले गया। इस दौरान नशे में धुत ड्राइवर ने न तो गाड़ी रोकी, न पीछे मुड़कर देखा। पूरी घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो गया है, जिसे देखकर लोग गुस्से में हैं और आरोपी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग कर रहे हैं।

मामला तब शुरू हुआ जब हलोल-शामलाजी हाईवे पर तेज रफ्तार से आ रही एक सफेद रंग की कार ने सामने से जा रही बाइक को जबरदस्त टक्कर मारी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि बाइक का अगला हिस्सा कार में फंस गया और बाइक सवार युवक भी कार के नीचे जा दबा। गाड़ी चलाने वाला आरोपी मनीष पटेल शराब के नशे में धुत था, जो पेशे से वडोदरा का शिक्षक बताया जा रहा है। लेकिन कार रोकने के बजाय वह उसे और तेज चलाता रहा।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, सड़क पर बाइक और सवार को घिसटते देख बाकी वाहन चालकों ने आरोपी को रोकने की

कोशिश की। कई लोग गाड़ी के पीछे दौड़े और जोर-जोर से चिल्लाते रहे, मगर नशे में धुत चालक ने किसी की एक न सुनी। इस दौरान वहां से गुजर रहे कई लोगों ने पूरी घटना का वीडियो बना लिया, जो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो चुका है।

घटना की सूचना मिलते ही बाकोर पुलिस हरकत में आई और आरोपी कार चालक का पीछा कर उसे पकड़ लिया। जांच में पता चला कि कार में मनीष पटेल के साथ उसका दोस्त मेहुल पटेल भी मौजूद था और दोनों ने शराब पी रखी थी। पुलिस ने दोनों को हिरासत में लेकर कार को जब्त कर लिया है।

इस हादसे में बाइक सवार 50 वर्षीय दिनेशभाई वरगीभाई सारेल और 18 वर्षीय सुनील मच्छर गंभीर रूप से घायल हुए हैं। दिनेशभाई को लुनावाड़ा सिविल अस्पताल और सुनील को गोधरा सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनकी हालत नाजुक बताई जा रही है। पुलिस ने आरोपी शिक्षक के खिलाफ शराब पीकर गाड़ी चलाने, लापरवाही से वाहन चलाने और हत्या के प्रयास जैसी गंभीर धाराओं में मामला दर्ज कर आगे की जांच शुरू कर दी है।

स्थानीय लोगों ने कहा कि एक शिक्षक से इस तरह का व्यवहार समाज के लिए शर्मनाक है। घटना ने राज्यभर में सड़क सुरक्षा और शराब के नशे में ड्राइविंग को लेकर फिर से बहस छेड़ दी है। पुलिस अब यह भी जांच कर रही है कि आरोपी शिक्षक पहले भी ऐसे किसी मामले में शामिल रहा है या नहीं।

गांधीजी का मज़ाक उड़ाने वाले सरदार पटेल कैसे बने उनके सबसे बड़े अनुयायी — एक पर्ची ने बदल दी ज़िंदगी, प्रधानमंत्री पद छोड़ दिया आदेश पर

(जीएनएस)। खेडा। भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल का जीवन जितना संघर्षपूर्ण था, उतना ही प्रेरक भी। लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि एक समय ऐसा भी था जब पटेल, महात्मा गांधी के विचारों का खुलकर मज़ाक उड़ाते थे। अहमदाबाद के वकीलों की दुनिया में नाम कमाने वाले यह बैरिस्टर, गांधीजी को "ब्रह्मचर्य और गटर सफाई का प्रचारक" कहकर चिढ़ाया करते थे। पर वही पटेल, बाद में गांधीजी के ऐसे निष्ठावान अनुयायी बने कि उनके कहने पर प्रधानमंत्री पद तक ठुकरा दिया। यह कहानी न केवल दो महान नेताओं के रिश्ते की है, बल्कि उस आत्मिक परिवर्तन की भी, जिसने एक वकील को "भारत का सरदार" बना दिया।

बैरिस्टर वल्लभभाई पटेल की गणना अहमदाबाद के सबसे होशियार और सफल वकीलों में होती थी। वे ब्रिज खेलना पसंद करते थे और शाम को गुजरात क्लब में अपने मित्रों के साथ घंटों तर्क-वितर्क में समय बिताते थे। इसी दौरान, उनके साथी वकील कोचरब आश्रम से लौटकर गांधीजी के बारे में बातें करते थे। पटेल मज़ाक में कहते, "वो बैरिस्टर ब्रह्मचर्य निभाने, गटर साफ करने और गेहूं से कंकर चुनने वाले देशसेवक बनाने का कारखाना चला रहे हैं।" उस समय उन्हें राजनीति से गहरी वितृष्णा थी और वे मानते थे कि देशसेवा का यह रास्ता सिर्फ मूर्खता है।

साल 1915 में जब गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से लौटे और कोचरब

आश्रम में बस गए, तब वे गुजरात और भारत के लोगों को स्वराज की भावना से जोड़ने लगे। गांधीजी का नाम शहर में चर्चा का विषय बन गया था, लेकिन पटेल उनसे मिलने से बचते थे। यहां तक कि जब गांधीजी किसी कार्यक्रम में आते, तो अधिकांश वकील उनसे मिलने और फोटो खिंचवाने को आतुर रहते, पर पटेल अपनी कुर्सी से नहीं उठते।

परंतु एक दिन ऐसा हुआ जिसने पटेल के जीवन की दिशा ही बदल दी। यह वह समय था जब गांधीजी ने ब्रिटिश सरकार को 'होमरूल लीग' के मुद्दे पर पत्र लिखा था। उस पत्र की भाषा, आत्मसम्मान और निर्भीकता ने पटेल को भीतर तक झकझोर दिया। गांधीजी ने लिखा था— "हम अपने अधिकारों के लिए सरकार से भीख नहीं मांगते। नागरिकों को स्वयं अपनी शक्ति से अधिकार प्राप्त करने होंगे।" यही वाक्य पटेल के मन में गूंज उठा।

धीरे-धीरे पटेल गांधीजी से मिलने लगे। गांधीजी की सादगी, अनुशासन और जनता के लिए समर्पण ने पटेल को गहराई से प्रभावित किया। जब 1918 में खेड़ा सत्याग्रह शुरू हुआ, तो पटेल गांधीजी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहे। किसानों के अधिकारों के लिए अंग्रेज़ सरकार से सीधी टक्कर लेने वाले पटेल ने उसी समय अपना जीवन जनसेवा को समर्पित कर दिया। गांधीजी ने उनमें नेतृत्व का अद्भुत गुण देखा और कहा — "वल्लभ, तुम मेरे लिए देश के सरदार हो।"

इसके बाद तो पटेल गांधीजी के सबसे विश्वसनीय साथियों में शामिल हो गए। उन्होंने देश की एकता के लिए जो कार्य किए, वह इतिहास के स्वर्णाक्षरों में दर्ज हैं। आज़ादी के बाद जब देश के पहले प्रधानमंत्री के चयन का समय आया, तो कांग्रेस के अधिकांश प्रदेश अध्यक्षों ने पटेल के पक्ष में मत दिया। लगभग सर्वसम्मति से वे देश के प्रथम प्रधानमंत्री बनने जा रहे थे। लेकिन तभी गांधीजी ने उन्हें एक पर्ची दी, जिस पर लिखा था — "वल्लभ, तुम अपना नाम वापस ले लो।" गांधीजी की इच्छा, उनके लिए आदेश थी। बिना कोई सवाल किए पटेल ने अपना नाम वापस ले लिया। परिणामस्वरूप जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस अध्यक्ष बने, और वही बाद में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री। पटेल ने इस निर्णय पर कभी कटुता नहीं दिखाई। उन्होंने कहा, "नेहरू मेरा छोटा भाई है। उसे मेरा सहयोग हमेशा मिलेगा।"

फिर भी गुजरात और देश के एक बड़े वर्ग के मन में यह कसक आज भी जिंदा है कि सरदार पटेल को प्रधानमंत्री नहीं बनाया गया। करमसद में बने सरदार और उनके भाई विट्ठलभाई पटेल के स्मारक पर आज भी लोग श्रद्धांजलि देने आते हैं और कहते हैं कि उन्होंने देश के लिए जो किया, वह किसी भी पद से कहीं बड़ा था।

उद्योगपति नीलेश डोबरिया और रवि डोबरिया ने स्मारक यात्रा के दौरान कहा — "सरदार साहब ने देश की सेवा में सब कुछ समर्पित कर दिया। उन्होंने प्रधानमंत्री की कुर्सी छोड़ी, लेकिन आज भी भारत की हर ईंट में उनका नाम गूंजता है।"

वास्तव में, गांधीजी के प्रति जो व्यक्ति कभी उपहास करता था, वही आगे चलकर उनका सबसे प्रबल अनुयायी बन गया। यह सिर्फ राजनीतिक परिवर्तन नहीं था — यह एक आत्मिक जागरण था। यही कारण है कि जब इतिहास भारत की एकता, त्याग और नेतृत्व की बात करता है, तो हर पंक्ति में लिखा मिलता है — "यह देश सरदार पटेल का भारत है।"

संपादकीय

साइबर ठगी का जाल

शायद ही कोई दिन ऐसा जाता होगा जब कोई बुजुर्ग या आम लोग साइबर ठगी के शिकार न हुए हों। पिछले दिनों महाराष्ट्र में एक सेवानिवृत्त जज भी डिजिटल अरेस्ट स्कैम के शिकार हो गए। पिछले सप्ताह ऐसा ही एक अन्य दुखद मामला पुणे से सामने आया जब साइबरों ठगों ने एक 82 वर्षीय सेवानिवृत्त अधिकारी को डिजिटल हाउस अरेस्ट स्कैम में फंसाकर 1.19 करोड़ लूट लिए। कई दिन के मानसिक उत्पीड़न व आर्थिक क्षति से टूट गए वृद्ध की आखिर सदमे से मौत हो गई। यह विचारणीय पहलू है कि कैसे पढ़े-लिखे लोग साइबर ठगों की साजिश की गिरफ्त में आ जाते हैं। वैसे आम आदमी को साइबर ठगों व फर्जी फोन कॉल्स से बचाने के लिये पुख्ता व्यवस्था होना बेहद जरूरी है। आम लोगों की सुविधा व सुरक्षा के लिये सरकार के प्रयासों के बाद अब दूरसंचार विभाग ने मार्च 2026 में ऐसी व्यवस्था लागू करने के तैयारी की, जिसमें बिना टू-कॉलर के खुद मोबाइल अवांछित फोन के प्रति सजग करेगा। नियामक संस्था ट्राई ने इस प्रस्ताव पर सहमति जतायी है। यह विडंबना ही कि जैसे-जैसे नई तकनीक आम आदमी के जीवन में सुविधा लाती है, वहीं असामाजिक तत्व उसे लूट-खसोट का हथियार बनाने में आगे निकल जाते हैं। देश में इंटरनेट सेवाओं के विस्तार और मोबाइल फोन की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि के साथ ही साइबर अपराधों में खासी तेजी आई है। जरा सी चूक होने पर लाखों लोग, साइबर धोखाधड़ी में अपने जीवनभर की पूंजी कुछ ही क्षणों में गवां देते हैं। अपराधियों का संजाल इतना विस्तृत व रहस्यमय है कि प्रवर्तन एजेंसियां जब तक उन तक पहुंचती हैं, पैसा विदेशों में ट्रांसफर हो जाता है। इस संकट का एक पहलू अनजान नंबरों से आने वाली फोन कॉल्स होती हैं, जिसके जरिये अपराधी लोगों को भ्रमित कर जीवन की जमा पूंजी लूट लेते हैं। दरअसल, संचार क्रांति के चलते तमाम सेवाएं ऑनलाइन उपलब्ध हुई हैं, लेकिन इस सुविधा के साथ पुरानी पीढ़ी साम्य नहीं बैठा पाती है।

अब इसी चुनौती को दूर करने के लिये दूरसंचार विभाग आम उपभोक्ता को ऐसी सुविधा देने जा रहा है, जिसमें फोन करने वाले को पहचाना जा सकेगा। फोन पर कॉल करने वाले व्यक्ति का नाम लिखा नजर आएगा। फिर व्यक्ति अपनी सुविधा अनुसार फोन कॉल्स लेना तय कर सकता है। दूरसंचार नियामक ट्राई की मंजूरी के बाद इस दिशा में तेजी से काम हो रहा है। हालांकि, फोन करने वाले व्यक्ति की जानकारी जुटाने के कई ऐप अभी भी मौजूद हैं, लेकिन उनका उपयोग कुछ ही लोग कर पाते हैं। वैसे ऐसा निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि ऐप द्वारा दी जाने वाली सूचना सटीक है। ऐसे में यदि दूरसंचार विभाग की कोशिश सिरे चढ़ती है तो इससे करोड़ों उपभोक्ताओं को सुरक्षा कवच मिल पाएगा। पहले इस सुविधा का लेना मांग पर आधारित था, लेकिन बाद में तय किया गया कि यह सुविधा प्रत्येक मोबाइल उपयोगकर्ता को उपलब्ध करायी जाएगी। विश्वास किया जा रहा है कि अगले साल मार्च तक पूरे देश में यह सुविधा उपलब्ध हो जाएगी। जानकारों का मानना है कि इस सुविधा से किसी सीमा तक मोबाइल के जरिये धोखाधड़ी करने वाले अपराधियों पर नकेल कसी जा सकेगी। मोबाइल उपयोगकर्ता की सजगता इसमें मददगार हो सकेगी। स्क्रीन पर अनजान नंबर व नाम देखने के बाद मोबाइलधारक फोन कॉल्स को उठाने से बच सकता है। वैसे इसके साथ ही देश में डिजिटल साक्षरता की दिशा में व्यापक पहल करने की जरूरत है। विभिन्न सूचना माध्यमों के जरिये लोगों को सजग-सतर्क किए जाने की आवश्यकता है। शहरों से लेकर ग्राम पंचायतों तक जनजागरण अभियान चलाकर लोगों को बताया जाना चाहिए कि बैंक, सीबीआई, कोर्ट या अन्य प्रवर्तन एजेंसियां कभी फोन करके उनके बैंक खाते या अन्य मामलों की जानकारी नहीं मांगती हैं। ऐसे फर्जी कॉल्स की प्रमाणिकता की पुष्टि करने के लिये हेल्पलाइन सुविधाओं में विस्तार करने की भी जरूरत है। देश में मोबाइल नेटवर्क उपलब्ध कराने वाली कंपनियों को भी बाध्य किया जाना चाहिए कि वे उपयोगकर्ताओं को शिक्षित करके संदिग्ध फोन नंबरों के प्रति सचेत करें।

सूर्योदय के देश में ताकाइची का उदय

> प्रधानमंत्री के पद पर साने ताकाइची की ताजपोशी को भारत के लिए भी सुखद संकेत माना जा रहा है। एक तो वे उन पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की अनुयायी हैं, जिनकी प्रधानमंत्री मोदी के साथ भारतीय संबंधों को लेकर बेहतर कैमिस्ट्री रही है। सदियों से दोनों देशों के रिश्ते खास रहे हैं।

जापान के सत्ता शीर्ष पर पहली बार एक महिला का विराजमान होना, जापानी समाज में एक बड़े बदलाव का संकेत है। वहां स्त्री को यह सम्मान मिलने में कितना वक्त लगा, इसका अंदाज इस बात से लगाया जा सकता है कि साने ताकाइची जापान की 104वीं प्रधानमंत्री बनी हैं। वह भी ऐसे वक्त में जब देश राजनीतिक अस्थिरता के भंवर से गुजर रहा है। लगातार नेतृत्व परिवर्तन का घटनाक्रम जारी है। कुछ माह पूर्व सत्तारूढ़ लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी को आम चुनावों में गहरा झटका लगा था। पार्टी संसद में बहुमत के लिए गठबंधन की राजनीति की शरण में जाने को मजबूर हुई। बहरहाल, दक्षिणपंथी रुझान वाली साने ताकाइची जापान में आयरन लेडी के नाम से जानी जाती हैं। उनके चुनाव के बाद सड़कों में जनता का सकारात्मक प्रतिसाद उनकी लोकप्रियता का पैमाना कहा जा सकता है। वे दस बार संसद के लिए चुनी जा चुकी हैं। देश की आर्थिक सुरक्षा व लैंगिक समानता के लिए किए गए प्रयासों के लिए उन्हें सराहा जाता रहा है।

कुछ वर्ष पहले एक चुनावी जनसभा में एक हमले में मारे गए पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की शिष्या माना जाता है साने ताकाइची को। ऐसे में विश्वास किया जाता है कि वे प्रधानमंत्री बनने के बाद आबे की 'एबेनोमिक्स' की विकास नीति का ही अनुसरण करेंगी, जिसमें करों में कटौती तथा सार्वजनिक निवेश को प्राथमिकता देकर विकास को गति देने को प्राथमिकता दी जाती है। आबे के एजेंडे में भारत से बेहतर रिश्ते बनाने का संकल्प भी शामिल रहा है।

दरअसल, साने ताकाइची को प्रधानमंत्री के रूप में कांटों का ताज ही मिला है। मौजूदा दौर में जापान आर्थिक चुनौतियों से गुजर रहा है। महंगाई से जनता परेशान है और जापान की मुद्रा येन के अवमूल्यन से संकट बढ़ा है। दरअसल, कोरोना संकट, वैश्विक अशांति और ट्रंप की दुनिया को हिला देने वाली आर्थिक नीतियों से जापान भी खासा प्रभावित हुआ है। चीन की आक्रामक वैश्विक नीतियों के चलते हिंद-प्रशांत क्षेत्र अमेरिका व अन्य महाशक्तियों का अखाड़ा बना हुआ है। वहीं उत्तर कोरिया की आक्रामक सामरिक नीतियों के चलते जापान में अपनी सैन्य ताकत को मजबूत करने की मांग तेज हो रही है। चारों तरफ से मिल रही सुरक्षा चुनौतियों के मद्देनजर साने ताकाइची भी जापान की सैन्य ताकत बढ़ाने के पक्ष में हैं। वे जापान की सुरक्षा के लिए रक्षा तैयारियां बढ़ाने और रक्षा खर्च को जापान के सकल घरेलू उत्पाद के दो प्रतिशत से अधिक करने की पक्षधर हैं। कई मायनों में यह कदम दशकों तक शांति पक्षधरता व सैन्य शक्ति न बढ़ाने की जापान की विदेश नीति में बड़े बदलाव का भी संकेत है।

दरअसल, साने ताकाइची दक्षिणपंथी रुझान की नेता मानी जाती हैं। वे राष्ट्रीय सुरक्षा नीति से जुड़े मुद्दों से लेकर परिवार व महिलाओं के जीवन को लेकर रूढ़िवादी नजरिया रखती हैं। वे जापानी समाज में समलैंगिक विवाहों की विरोधी रही हैं। पूरी दुनिया के विकसित देशों में प्रवासियों को लेकर जिस तरह सख्त नीतियां अपनायी जा रही हैं, साने ताकाइची भी उन्हीं का अनुसरण करती हैं। वे चाहती हैं कि जापान की रीति-नीतियों का उल्लंघन करने वाले आप्रवासियों से सख्ती से निपटा जाना चाहिए।

जापान में 'आयरन लेडी' कही जाने वाली साने ताकाइची की प्रधानमंत्री पद नियुक्ति को सत्ता व समाज में स्त्रियों की बढ़ती भूमिका के तौर पर देखा जा रहा है। दरअसल, जापान को भारी लिंग असमानता वाला देश कहा जाता रहा है। यहां संसदीय प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी महज पंद्रह फीसदी बताई जाती है। भले ही उनकी ताजपोशी राजनीतिक क्षरण के दौर से गुजर रही लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी की राजनीतिक मजबूरी रही हो, लेकिन उनकी इस पद पर तैनाती का महिलाओं के लिए एक बड़ा प्रतीकात्मक महत्व भी है। यह भी कि स्त्री अपनी योग्यता व क्षमता से अपना आकाश हासिल कर सकती हैं।

निस्संदेह, भू-राजनीतिक समीकरणों के चलते जापान आज एक महत्वपूर्ण स्थिति में है। अमेरिका चीन की साम्राज्यवादी नीतियों पर अंकुश लगाने के लिए हिंद-प्रशांत क्षेत्र में जापान को अपना बड़ा साझीदार मानता है। भारत व आस्ट्रेलिया के साथ जापान क्वाड में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ताइवान को लेकर जापान का रवैया भी भारत को रास आता है।

प्रधानमंत्री के पद पर साने ताकाइची की ताजपोशी को भारत के लिए भी सुखद संकेत माना जा रहा है। एक तो वे उन पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की अनुयायी हैं, जिनकी प्रधानमंत्री मोदी के साथ भारतीय संबंधों को लेकर बेहतर कैमिस्ट्री रही है। सदियों से दोनों देशों के रिश्ते खास रहे हैं। आजादी की लड़ाई में भारतीय सेनानियों को जापान से खासा सहयोग मिला। नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जापान में सक्रियता से जुड़ी स्मृतियां दोनों देशों को और करीब लाती हैं। बौद्ध धर्म भी दोनों देशों के रिश्तों को समृद्ध करता है। वैसे भी रक्षा व सुरक्षा संबंधों के अलावा भारत की विकास योजनाओं में भारी जापानी निवेश हुआ है। दूसरे शब्दों में भारत की विकास यात्रा में जापान एक भरोसेमंद साझेदारी अतीत में भी रहा है। भरोसा जताया जा रहा है कि साने ताकाइची की ताजपोशी से दोनों देशों के राजनयिक ही नहीं, आर्थिक, सामरिक, सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में रिश्तों को नये आयाम मिलेंगे।

प्रेरणा

जब डॉ. कलाम ने दिखाया भारत की आत्मनिर्भरता का चमत्कार

भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों का इतिहास हमेशा से गौरवपूर्ण रहा है, लेकिन कुछ ऐसे क्षण होते हैं जो पूरे राष्ट्र के आत्मविश्वास को नई दिशा देते हैं। ऐसा ही एक क्षण था जब भारत के महान वैज्ञानिक और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने स्वदेशी तकनीक के माध्यम से पोलियोग्रस्त बच्चों के लिए एक क्रांतिकारी खोज की। यह वह दौर था जब देश विदेशी तकनीक पर काफी हद तक निर्भर था, लेकिन डॉ. कलाम की सोच अलग थी। उनका मानना था कि भारत के पास खुद में इतनी क्षमता है कि वह किसी भी क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सकता है, बस आवश्यकता है सही दिशा और स्वदेशी भावना की। एक बार डॉ. कलाम ने तीन प्रमुख संस्थानों—डीआरडीओ, एम्स और मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी—के साथ मिलकर पोलियोग्रस्त बच्चों के लिए हल्के कैलिपर तैयार किए। पहले जो कैलिपर बच्चे इस्तेमाल करते थे, वे लोहे या स्टील के बने होते थे, जिनका वजन करीब चार किलो तक होता था। इन भारी कैलिपरों के कारण बच्चों के लिए चलना-फिरना बेहद कठिन था। कई बच्चे तो दर्द और थकान के कारण स्कूल जाना भी छोड़ देते थे। इस समस्या ने डॉ. कलाम को भीतर तक झकझोर दिया। उन्होंने अपने वैज्ञानिक मस्तिष्क और मानवीय संवेदना को जोड़कर हल्के कैलिपर बनाने का संकल्प लिया।

उन्होंने कार्बन फाइबर जैसी विशेष सामग्री का प्रयोग किया, जो न केवल मजबूत थी बल्कि बेहद हल्की भी। जब नए कैलिपर तैयार हुए, तो उनका वजन महज कुछ सौ ग्राम रह गया। इसे पहनने वाले

बच्चों के चेहरे पर जो खुशी झलकी, वही कलाम के लिए सबसे बड़ा पुरस्कार थी। एक बच्चे ने तो उनसे कहा—"अब मैं अपने दोस्तों के साथ दौड़ सकता हूं।" उस पल डॉ. कलाम की आंखें भीग गईं। उन्होंने महसूस किया कि असली विज्ञान वही है जो मानवता की सेवा में काम आए। जब यह सफलता मीडिया तक पहुंची, तो एक दिन एक पत्रकार ने उनसे उत्साहित होकर कहा, "सर, आपने स्वदेश में हल्के कैलिपर बनाकर पूरे विश्व में भारत का नाम रोशन कर दिया है।" दूसरा पत्रकार बोला, "अब भारत आत्मनिर्भर बन गया है, जो किसी भी तकनीक को खुद विकसित कर सकता है।" इस पर डॉ. कलाम अपने शांत और मुस्कुराते हुए अंदाज में बोले—"मैं तो हमेशा यही कहता हूं कि भारत में अद्भुत संभावनाएं हैं। हमारा देश प्रारंभ से ही विश्वगुरु रहा है। कृषि से लेकर अंतरिक्ष तक, भारत ने हर क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता दिखाई है। हमें हर स्वदेशी उपलब्धि पर गर्व होना चाहिए क्योंकि यही हमारी असली पहचान है।" डॉ. कलाम ने आगे कहा था कि भारत गेहूं और चावल उत्पादन में दुनिया में दूसरा, दूध उत्पादन में पहला और दूरसंचार उपग्रहों के विकास में अग्रणी देश है। उन्होंने यह भी याद दिलाया कि हमारे पास हजारों वर्षों का ज्ञान है—योग, आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र और वास्तु विज्ञान जैसे क्षेत्रों में हमारी परंपरा विश्व को प्रकाश देने वाली रही है। उन्होंने कहा था कि हमें अपने अतीत की इस गौरवशाली विरासत को आधुनिक विज्ञान से जोड़ना चाहिए।

उनकी यह सोच "स्वदेशी का गर्व" का सजीव उदाहरण थी। उन्होंने बार-बार इस बात पर जोर दिया कि अगर भारत के युवा खुद पर भरोसा करें और देश की मिट्टी से जुड़ी सोच के साथ आगे बढ़ें, तो भारत को किसी विदेशी तकनीक की आवश्यकता नहीं होगी। यही कारण था कि वे हमेशा आत्मनिर्भर भारत के सबसे बड़े प्रेरक बने। डॉ. कलाम का यह प्रयास केवल एक तकनीकी आविष्कार नहीं था, बल्कि यह संदेश था कि जब हम अपने संसाधनों, अपनी बुद्धि और अपनी भावना का उपयोग करते हैं, तब कोई भी बाधा असंभव नहीं रहती। उनके द्वारा बनाए गए ये हल्के कैलिपर हजारों पोलियोग्रस्त बच्चों के जीवन में नई ऊर्जा लेकर आए, और साथ ही यह संदेश भी दिया कि भारत की सच्ची ताकत उसके स्वदेशी नवाचार में निहित है। आज जब देश आत्मनिर्भर भारत के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, तब डॉ. कलाम की यह कहानी और भी प्रासंगिक हो जाती है। यह हमें याद दिलाती है कि आत्मनिर्भरता केवल तकनीकी उपलब्धि नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आत्मगौरव की भावना है। हमें हर स्वदेशी उपलब्धि पर उतना ही गर्व होना चाहिए जितना डॉ. कलाम को था—क्योंकि यही भावना भारत को फिर से विश्वगुरु बनने की राह पर ले जाएगी।

अमेरिका, चीन और भारत... रिश्तों की दूरगामी दशा-दिशा पर भी असर

डोनाल्ड ट्रंप के एशिया दौरे को लेकर बहुत उत्सुकता थी। इस दौरान चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग के साथ उनकी मुलाकात पर भी नजरें टिकी हुई थीं। यह बहुत स्वाभाविक भी था। ट्रंप का एशिया दौरा एक ऐसे समय में हुआ जब उनकी विदेश नीति और दृष्टिकोण को लेकर कहा जा रहा था कि उसमें अंतर्मुखी भाव बढ़ रहा है। इसी तरह तमाम किंतु-परंतु के बीच चिनफिंग के साथ उनकी मुलाकात ने ट्रेड वार को लेकर छिड़ रहे बादलों को कुछ छांटने का काम किया। इतना ही नहीं, अमेरिका की ओर से इस बैठक को 'जी-2' के रूप में प्रचारित करना भी बहुत कुछ कहता है।

मौजूदा वैश्विक ढांचे में दो सबसे शक्तिशाली देशों अमेरिका और चीन को मिलाकर गढ़े गए जी-2 समूह का उपयोग वैसे तो अनौपचारिक रूप से होता रहा है, लेकिन व्हाइट हाउस की ओर से इसका आधिकारिक प्रयोग इसे औपचारिक मान्यता प्रदान करता प्रतीत हो रहा है। हालांकि दक्षिण कोरिया में हुई ट्रंप-चिनफिंग मुलाकात के अभी कोई विशेष निहितार्थ तो नहीं निकाले जा सकते, लेकिन खासतौर से ट्रंप का रवैया इसे लेकर बहुत उत्साहित दिख रहा है।

वर्ष 2019 के बाद चिनफिंग से पहली बार मिलने के बाद ट्रंप ने न केवल चीन पर लगाए टैरिफ में कुछ कटौती की, बल्कि अपने चीन जाने का एलान भी किया। अमेरिकी खेमा यह दावा भी कर रहा है कि दोनों नेताओं की बातचीत के बाद चीन ने रेयर अर्थ तत्वों के उपयोग से जुड़ी अपनी सख्त नीति में कुछ नरमी के संकेत दिए हैं, लेकिन चीन की ओर से कुछ ठोस नहीं कहा गया है। इससे पहले आसियान सम्मेलन के लिए ट्रंप का मलेशिया दौरा चर्चा में रहा। इससे वे धारणाएं ध्वस्त हुईं कि अमेरिका एशिया में अपनी सक्रियता सीमित करना चाहता है।

आसियान के लिए भी ट्रंप की मेजबानी महत्वपूर्ण हो गई थी, क्योंकि इस साल ईस्ट तिमोर के जुड़ाव के साथ उसके सदस्य देशों की संख्या बढ़कर 11 हो गई है। टैरिफ संबंधी तमाम अनिश्चितताओं के दौर में निर्यात केंद्रित आसियान अर्थव्यवस्थाओं के लिए अपने सबसे बड़े खरीदार अमेरिका के साथ हिसाब-किताब दुरुस्त रखना भी आवश्यक हो गया था। अपने दौरे के साथ ट्रंप ने दोहराया कि आसियान हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अमेरिका के लिए एक अहम धुरी बना रहेगा।

बदली हुई परिस्थितियों में आसियान देशों के लिए भी यह जरूरी हो चला था कि वे अमेरिका को साधे रखने में सफल हों। इस मंशा को समझने के लिए हमें आसियान के मूल उद्देश्य को समझना होगा। वर्ष 1967 में एक तरह से अमेरिकी नेतृत्व में इसके गठन की मंशा साम्यवाद को चुनौती देना था। समय के साथ आसियान देश आर्थिक रूप से मजबूत होते गए। इस दौरान चीन के साथ उनका आर्थिक जुड़ाव बढ़ता गया। हालांकि सामरिक मोर्चे पर अमेरिका के साथ उसकी सक्रियता कायम रही। वैसे तो आसियान देशों की मूल रूप से यही रणनीति रही है कि वे आर्थिक गतिविधियों और समन्वय पर अधिक ध्यान केंद्रित करेंगे और किसी देश के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे, लेकिन अमेरिका और चीन के बीच बढ़ रही खेमेबाजी ने आसियान के समक्ष दुविधा बढ़ाई है।

इस दुविधा का कारण यह है कि संगठन में कुछ देशों का झुकाव अगर अमेरिका की तरफ है तो कुछ चीन की ओर झुकाव रखते हैं। दक्षिण चीन सागर, म्यांमार के घटनाक्रम और हाल में कंबोडिया-थाइलैंड युद्ध जैसे मुद्दे भी समय-समय पर इन देशों को आमने-सामने करते आए हैं। ऐसे में ट्रंप का दौरा उनके बीच कुछ सहमति बनाने का माध्यम भी बना। इस दौरान ट्रंप ने थाइलैंड और कंबोडिया के बीच औपचारिक युद्ध विराम समझौता कराया। उन्होंने अमेरिका के लिए आसियान की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा भी कि वह एशिया में अमेरिकी रणनीति का केंद्र बना रहेगा।

आसियान सम्मेलन के बाद ट्रंप जापान पहुंचे और अमेरिका के पारंपरिक सहयोगी इस देश की पहली महिला प्रधानमंत्री के साथ कई मुद्दों पर चर्चा की। इस दौरान रेयर अर्थ तत्वों के मामले में चीनी वर्चस्व को चुनौती देने के लिए उन्होंने जापान के साथ सहयोग बढ़ाने की बात भी कही। यह किसी से छिपा नहीं है कि रेयर अर्थ तत्वों के मोर्चे पर चीन किस तरह अपना वर्चस्व स्थापित कर चुका है। खासतौर से वह रेयर अर्थ प्रसंस्करण का एक पर्याय बन चुका है। इसी स्थिति का लाभ उठाते हुए कुछ दिन पहले चीनी वाणिज्य मंत्रालय ने रेयर अर्थ बिक्री को लेकर मनमाने नियम-कायदे तय करने की मंशा भी दिखाई है।

अगर चीन की यह मंशा सफल हो जाती है तो दुनिया में स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण से लेकर इलेक्ट्रिक वाहनों की आपूर्ति शृंखला और कई अन्य-अनेक कार्यों की नियति चीन ही निर्धारित करने लगेगा। उसकी काट के लिए ही ट्रंप ने जापान को रेयर अर्थ परिदृश्य पर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। हालांकि जापान दौरे के बाद चिनफिंग के साथ मुलाकात में उनकी ओर से संकेत मिले कि चीन रेयर अर्थ के मामले में रियायत की राह पर ही चलेगा। हालांकि ट्रंप के मनमाने दावे और बीजिंग की नपी-तुली रणनीति को देखते हुए इस मामले में कुछ भी कहना जल्दबाजी होगा।

ट्रंप के दौरे से निकले संकेत भारत को भी बखूबी समझने होंगे। उसे वैश्विक परिस्थितियों में हो रहे परिवर्तनों के अनुसार स्वयं को ढालने पर ध्यान देना होगा। उसे अमेरिका के साथ व्यापार समझौते पर जल्द ही सहमति बनाने के प्रयास तेज करने होंगे। यह सही है कि ट्रंप के रवैये से ऐसे किसी समझौते को लेकर संदेह अधिक बढ़ गए हैं, लेकिन कहीं न कहीं कोई मार्ग तलाशना ही होगा। ऐसा लग रहा है कि ट्रंप आर्थिक और सामरिक पहलुओं को अलग-अलग तराजू पर तौल रहे हैं, लेकिन व्यापक संदर्भों में इन्हें अलग करके नहीं देखा जा सकता। अक्सर ये एक-दूसरे के पूरक ही होते हैं। भारत और अमेरिका दोनों को यह समझना होगा कि व्यापार समझौते में देरी न केवल दोनों देशों के हितों को प्रभावित करेगी, बल्कि द्विपक्षीय रिश्तों की दूरगामी दशा-दिशा पर भी असर डालेगी।

अभियान

देवउठनी एकादशी पर होगा विष्णु जागरण: जब चार महीने बाद ब्रह्मांड में लौटेगी शुभता की लहर

हिंदू धर्म में एकादशी तिथि को विशेष रूप से पवित्र माना गया है, लेकिन कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी का महत्व सबसे अधिक है। यह वह दिन है जब भगवान विष्णु अपनी चार महीने लंबी योगनिद्रा से जागते हैं और संसार के पालन-पोषण का कार्य पुनः आरंभ करते हैं। इस दिन को देवउठनी एकादशी, देवप्रबोधिनी एकादशी या देवोत्थान एकादशी कहा जाता है। चार महीनों की इस अवधि को चातुर्मास कहा जाता है, जो आषाढ़ शुक्ल एकादशी से शुरू होकर कार्तिक शुक्ल एकादशी तक चलता है। इस अवधि में भगवान विष्णु शेषनाग की शय्या पर क्षीरसागर में विश्राम करते हैं और देवताओं के सभी कार्य भी स्थगित माने जाते हैं।

पौराणिक मान्यता के अनुसार जब भगवान विष्णु योगनिद्रा में जाते हैं, तब सभी शुभ और मांगलिक कार्य जैसे विवाह, गृहप्रवेश, मुंडन, यज्ञ और दान कार्यक्रम रोक दिए जाते हैं, क्योंकि सृष्टि का पालन करने वाले स्वयं भगवान विश्राम में होते हैं। देवउठनी एकादशी का दिन इस विश्राम का अंत और सृष्टि के पुनः संचालन का आरंभ होता है। यह वह क्षण होता है जब ब्रह्मांड में पुनः गति आती है, देवताओं में चेतना लौटती है और पृथ्वी पर शुभता की लहर दौड़ जाती है।

इस वर्ष यह शुभ अवसर 1 नवंबर 2025 को पड़ रहा है। पंचांग के अनुसार, कार्तिक शुक्ल एकादशी की तिथि 1 नवंबर की सुबह 9 बजकर 11 मिनट से आरंभ होकर 2 नवंबर की सुबह 7 बजकर 31 मिनट तक रहेगी। उदयातिथि के अनुसार व्रत और पूजा 1 नवंबर को ही रखी जाएगी। यह वह समय होगा जब लाखों श्रद्धालु भगवान विष्णु के प्रबोधन का पर्व मनाएंगे, तुलसी विवाह का आयोजन करेंगे और अपने जीवन में नए आरंभ की कामना करेंगे।

देवउठनी एकादशी का यह पर्व केवल धार्मिक दृष्टि से नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। ग्रामीण भारत में इस दिन से विवाह और उत्सवों का मौसम आरंभ होता है। कहा जाता है कि भगवान विष्णु के जागरण के साथ ही सृष्टि में सकारात्मक ऊर्जा पुनः प्रवाहित होती है। इसी कारण से इस दिन तुलसी विवाह का आयोजन किया जाता है, जिसमें तुलसी माता और भगवान शालिग्राम (विष्णु का प्रतीक रूप) का विवाह कराया जाता है। यह विवाह समृद्धि, वैवाहिक सुख और पारिवारिक सौहार्द का प्रतीक माना जाता है।

पौराणिक कथाओं में उल्लेख है कि एक बार देवी लक्ष्मी ने भगवान विष्णु से कहा कि आप सृष्टि के कार्यों में इतने व्यस्त रहते हैं कि विश्राम का अवसर ही नहीं मिलता। तब भगवान विष्णु ने उन्हें संतोष देने के लिए चार महीने के विश्राम का व्रत लिया, जिससे सृष्टि का संतुलन बना रहे और देवताओं को भी विश्राम मिले। यही से चातुर्मास की परंपरा आरंभ हुई।

इस बार देवउठनी एकादशी पर विशेष योग बन रहे हैं। ज्योतिषाचार्यों के अनुसार, इस दिन ब्रह्म योग, शुभ कर्म योग और सिद्धि योग का दुर्लभ संयोग बन रहा है। ग्रहों की अनुकूल स्थिति विशेष रूप से वृषभ, कन्या और मकर राशि के जातकों के लिए शुभ संकेत दे रही है। इन जातकों के जीवन में धन, मान-सम्मान और नए अवसरों की प्राप्ति होगी। वहीं तुला और कुंभ राशि के लोगों के लिए यह दिन आध्यात्मिक जागरण और मानसिक शांति का संदेश लेकर आएगा।

भक्तजन इस दिन प्रातःकाल स्नान कर पीले या सफेद वस्त्र धारण करते हैं। मंदिरों में दीपदान, तुलसी पूजन और शालिग्राम अभिषेक किया जाता है। रातभर भजन-कीर्तन और विष्णु सहस्रनाम का पाठ किया जाता है। यह भी कहा गया है कि जो भक्त देवउठनी एकादशी के दिन व्रत रखकर भगवान विष्णु की आराधना करते हैं, उन्हें जीवन में कभी दरिद्रता नहीं सताती और उनके पापों का नाश होता है।

आध्यात्मिक दृष्टि से देवउठनी एकादशी केवल विष्णु के जागरण का पर्व नहीं, बल्कि यह मनुष्य के भीतर के आलस्य, मोह और अज्ञान से जागने का संदेश है। जब भगवान विष्णु अपनी योगनिद्रा से उठते हैं, तब यह हमें भी प्रेरित करता है कि हम अपने भीतर की जड़ता से उठें और जीवन में सृजन, कर्म और सकारात्मकता का आरंभ करें।

यह पर्व हर वर्ष हमें याद दिलाता है कि नींद केवल विश्राम नहीं होती, बल्कि एक नई चेतना के जन्म की तैयारी होती है। जैसे भगवान विष्णु चार महीने बाद सृष्टि में फिर से ऊर्जा का संचार करते हैं, वैसे ही हमें भी अपने जीवन में हर ठहराव के बाद नई शुरुआत करनी चाहिए। यही देवउठनी एकादशी का सार है — जागृति, पुनर्जन्म और शुभता की पुनर्स्थापना।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरक उपस्थिति में एकता नगर में राष्ट्रीय एकता दिवस का शानदार समारोह

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के सान्निध्य में देशभक्ति के जोश के साथ अर्धसैनिक बलों की विभिन्न टुकड़ियों द्वारा दमदार परेड

-: प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी :-

- यह लौह पुरुष सरदार पटेल का भारत है, सुरक्षा तथा सम्मान के लिए कभी समाधान नहीं करता है
- देश की एकता व अखंडता के लिए चार स्तंभों पर आधारित सरकार द्वारा जन-जन को जोड़ने का कार्य किया जा रहा है
- जब तक देश नक्सलवाद-माओवाद के आतंक से पूरी तरह मुक्त न हो, तब तक यह सरकार शांत नहीं बैठेगी
- समग्र देश में करोड़ों लोगों ने आज एकता की शपथ ली है, जो देश की एकता को प्रोत्साहन देने के संकल्प का प्रतीक है

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरक उपस्थिति में शुक्रवार को एकता नगर में लौह पुरुष तथा अखंड भारत के शिल्पकार सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती का शानदार समारोह आयोजित हुआ। सरदार साहब की विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के सान्निध्य में देशभक्ति के जोश-उत्साह के साथ अर्धसैनिक बलों की विभिन्न टुकड़ियों द्वारा दमदार परेड आयोजित की गई। प्रधानमंत्री ने भारत माता की भक्ति को देश के प्रत्येक नागरिक की सबसे बड़ी पूजा बताते हुए कहा कि देश की एकता व अखंडता के लिए चार स्तंभों पर आधारित सरकार द्वारा जन-जन को जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्टैच्यू ऑफ यूनिटी में पाद-पूजन कर राष्ट्रीय एकता दिवस समारोह का प्रारंभ कराया। 'राष्ट्र प्रथम' की भावना को मजबूत करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि एकता राष्ट्र एवं समाज के अस्तित्व की मूल आधार है। जब तक समाज में एकता है, तब तक राष्ट्र की अखंडता सुरक्षित है। विकसित भारत के लक्ष्य की ओर पहुँचने के लिए एकता तोड़ने वाले हर षड्यंत्र को एकता की शक्ति से विफल बनाना होगा। भारत की एकता के चार मजबूत आधार स्तंभ हैं, जिसमें पहला स्तंभ है सांस्कृतिक एकता, जो हजारों वर्षों से राजनीतिक परिस्थितियों से अलग भारत को एक चेतना राष्ट्र बनाती है।

उन्होंने कहा कि भारत की एकता का दूसरा स्तंभ भाषा की एकता है, जहाँ सैकड़ों भाषाएँ तथा बोलियाँ देश के स्वाभिमान, रचनात्मक विचारधारा और विविधता की जीवंत प्रतीक हैं। किसी समाज, सत्ता या संप्रदाय ने कभी भी भाषा को हथियार बनाकर एक पर थोपने का प्रयास नहीं किया है।

उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय एकता का तीसरा स्तंभ भेदभावमुक्त विकास है। गरीबी तथा भेदभाव सामाजिक ताने-बाने की सबसे बड़ी कमजोरी हैं। सरदार पटेल गरीबी के विरुद्ध दीर्घकालीन योजना पर काम करना चाहते थे और कहते थे कि अगर आजादी 10 वर्ष पहले मिली होती, तो 1947 तक भारत खाद्य समस्या के संकट से मुक्त हो गया होता। सरदार पटेल ने रजवाड़ों के विलय जैसी चुनौती की समस्या को जैसे सुलझाया, वैसे अनाज की किल्लत की चुनौती की समस्या भी हल की होती। इस सरकार ने सरदार साहब के अधूरे संकल्प को पूरा कर एक दशक में 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि एकता का चौथा व अंतिम स्तंभ कनेक्टिविटी – दिलों का जुड़ाव है, जो आधुनिक भारत को विश्व के केन्द्र में ला रहा है। रिकॉर्ड हाईवे-एक्सप्रेसवे, वंदे भारत तथा नमो भारत जैसी ट्रेनों द्वारा रेल को ट्रांसफॉर्म कर, छोटे शहरों को एयरपोर्ट्स से जोड़कर उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम तक की दूरियाँ कमी की गई हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सरदार पटेल इतिहास लिखने में समय व्यय करने के स्थान पर इतिहास बनाने पर मेहनत करने के हिमायती थी, जिन्होंने नीतियों एवं निर्णयों द्वारा आजादी के बाद 550 से अधिक रजवाड़ों को एकसूत्र में बांधकर देश को एक बनाया था। 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का विचार उनके लिए सर्वोपरि था। श्री मोदी ने कहा कि केन्द्र सरकार की कार्यनीति में भारत की एकता-अखंडता का यह विचार मुख्य स्थान पर है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि राष्ट्रीय एकता दिवस एकता का महापर्व है। उन्होंने कहा कि जिस तरह हम 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस तथा 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में गौरवपूर्वक मनाते हैं, उसी प्रकार यह (एकता) दिवस प्रेरणा, गर्व एवं संकल्प का पवित्र पल है। समग्र देश में करोड़ों लोगों ने आज देश की एकता की शपथ ली है, जो देश की एकता को प्रोत्साहन देने के संकल्प का प्रतीक है।

एकता नगर में एकता मॉल तथा एकता गार्डन जैसे प्रयासों के उल्लेख के साथ प्रधानमंत्री ने कहा कि देश की एकता को नुकसान पहुंचाएं, ऐसी बातों या विचारों से दूर रहना चाहिए। यह केवल राष्ट्रीय कर्तव्य ही नहीं, बल्कि सरदार पटेल को सच्ची श्रद्धांजलि भी है। भारत माता की भक्ति देश के प्रत्येक नागरिक के लिए सबसे बड़ी पूजा है और आज के युग में देश की यह जरूरत है, जो प्रत्येक भारतीय के लिए संदेश, संकल्प तथा कार्यपथ का मार्गदर्शन करती है। देश की संप्रभुता को ही अपना एक मात्र लक्ष्य मानने वाले सरदार पटेल की नीतियों की याद दिलाते हुए श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि सरदार पटेल के निधन के बाद के वर्षों में तत्कालीन सरकारों में यह गंभीरता तथा अडिगता कम रही थी। कश्मीर में हुई भूलें, पूर्वोत्तर में उत्पन्न हुई समस्याएँ तथा देशभर में फले-फूले नक्सलवाद, माओवाद व आतंकवाद देश की संप्रभुता के लिए चुनौती समान थे, परंतु तत्कालीन सरकारों ने सरदार पटेल की नीतियों का अनुकरण करने के स्थान पर देश की संप्रभुता के प्रति अनदेखी की, जिसके विपरीत परिणाम हिंसा, रक्तपात तथा देश के विभाजन के रूप में देश ने भोगे।

श्री नरेन्द्र मोदी गुजरात की दो दिवसीय यात्रा के बाद शुक्रवार को वडोदरा हवाई अड्डे से विमान से दिल्ली जाने के लिए रवाना हो गए। उन्हें हवाई अड्डे से विदाई दी गई।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दो दिवसीय यात्रा के दौरान एकता नगर में विकास कार्यों का शिलान्यास व लोकार्पण किया और राष्ट्रीय एकता दिवस परेड तथा सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में उपस्थित रहे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जब वडोदरा हवाई अड्डे से दिल्ली के लिए रवाना हुए, तब महापौर श्रीमती पिंकीबेन सोनी, पुलिस आयुक्त श्री नरसिम्हा कोमार तथा जिला कलेक्टर श्री अनिल धामेलिया उपस्थित रहे।

उन्होंने कहा कि सरदार पटेल अखंड भारत के निर्माण के लिए लगातार प्रयासरत रहे। कश्मीर समस्या के निराकरण के लिए सरदार साहब द्वारा दिए गए सुझावों पर यदि अमल किया जाता, तो आज संपूर्ण कश्मीर भारत का अभिन्न अंग होता। लेकिन, तत्कालीन सरकार ने उनकी यह इच्छा पूरी नहीं होने दी। उन्होंने कहा कि कश्मीर को अलग विधान और अलग निशान देकर विभाजित किया गया, जो तत्कालीन सरकार की कमजोर नीतियों का परिणाम था। इस गलती की आग में देश दशकों तक सुलगता रहा, क्योंकि कश्मीर का एक हिस्सा पाकिस्तान के अवैध कब्जे में चला गया और वहां से राज्य-प्रायोजित आतंकवाद को हवा मिली, जिसकी कीमत देश ने अनेक जानें और संसाधनों के रूप में चुकाई। श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि कांग्रेस ने सरदार पटेल के एक भारत के विजन को भुला दिया था, लेकिन 2014 के बाद पूरे देश ने उनकी प्रेरणा से अडिग इच्छाशक्ति का अनुभव किया है। अनुच्छेद 370 की बेड़ियों को तोड़कर कश्मीर को पूरी तरह से मुख्यधारा में शामिल किया गया है। इसके कारण पाकिस्तान और आतंक के आकाओं को भारत की असली क्षमता का पता चल गया है। 'ऑपरेशन सिंदूर' ने पूरी दुनिया को बता दिया है कि यदि कोई भारत की ओर आंख उठाने की जुर्रत करेगा, तो भारत उसका मुंहतोड़ जवाब देगा। भारत हर बार पहले से कहीं बड़ा और निर्णायक जवाब देता है। यह लौह पुरुष सरदार पटेल का भारत है, जो अपनी सुरक्षा और सम्मान के साथ कभी समझौता नहीं करता।

प्रधानमंत्री ने कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में पिछले 11 वर्षों में भारत की सबसे बड़ी सफलता नक्सलवाद-माओवाद आतंक की कमर तोड़ना रही है। 2014 से पहले नक्सली देश के अंदर से ही अपनी हुकूमत चलाते थे, संविधान का पालन नहीं होता था, पुलिस-प्रशासन लाचार नजर आता था, सड़कें, स्कूल और अस्पतालों पर हमले होते थे और नए फरमान जारी होते थे। लेकिन, इस सरकार ने उन पर प्रचंड प्रहार किया, अर्बन नक्सलों और उनके समर्थकों को मुंहतोड़ जवाब दिया। वैचारिक लड़ाई जीती और नक्सली इलाकों में जाकर उन्हें मात दी गई।

एकता नगर की धरती से सरदार पटेल के सान्निध्य में प्रधानमंत्री ने दृढ़संकल्प व्यक्त करते हुए कहा कि जब तक देश नक्सलवाद-माओवाद के आतंक से पूरी तरह से मुक्त नहीं होगा, तब तक यह सरकार रुकेगी नहीं।

उन्होंने कहा कि देश की आंतरिक सुरक्षा को घुसपैठियों से भी बड़ा खतरा है। दशकों से ये विदेशी घुसपैठिये देश में घुसकर देशवासियों के संसाधनों पर कब्जा जमाते हैं, डेमोग्राफी का संतुलन बिगाड़ते हैं और एकता पर प्रहार करते हैं। भूतकाल की सरकारों ने वोट बैंक की राजनीति के लिए आंखें मूंद रखी थीं। लेकिन, अब पहली बार देश ने इस बड़े खतरे के विरुद्ध निर्णायक लड़ाई लड़ने का संकल्प किया है और लाल किले से 'डेमोग्राफी मिशन' का ऐतिहासिक ऐलान भी किया है।

इस विषय को गंभीरता से उठाते हुए प्रधानमंत्री ने चेतावनी देते हुए कहा कि कई लोग देशहित पर निजी हित को प्राथमिकता देकर घुसपैठियों को अधिकार दिलाने के लिए राजनीतिक लड़ाई लड़ रहे हैं, जिन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि अतीत की तरह देश में फिर से विभाजन हो जाए। लेकिन सच्चाई यह है कि यदि देश की सुरक्षा और पहचान खतरे में पड़ेगी, तो प्रत्येक व्यक्ति खतरे में होगा। इसलिए राष्ट्रीय एकता दिवस पर फिर से संकल्प लें कि हम भारत में रहने वाले प्रत्येक घुसपैठिये को बाहर निकालकर ही रहेंगे, ताकि राष्ट्र की अखंडता और अस्तित्व को मजबूत कर सकें। श्री मोदी ने कहा कि अतीत की सरकारों ने देश की विभुतियों को अपमानित किया था। इस सरकार ने उन्हें सम्मान देने का महाकार्य किया है। उनके स्मारक बनाकर यथोचित सम्मान भी दिया है। अंग्रेजों से विरासत में मिली गुलामी की मानसकिता को बदल दिया है।

सरदार पटेल की भावना को याद करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्हें सबसे अधिक खुशी देश के लिए काम करने में मिलती थी, और आज भी यही आह्वान है – मां भारती की साधना प्रत्येक देशवासी की सबसे बड़ी आराधना है। जब 140 करोड़ भारतवासी एक साथ खड़े होते हैं, तो पहाड़ भी रास्ता दे देते हैं, जब एक स्वर में बोलते हैं, तो वे शब्द भारत की सफलता का उद्घोष बन जाते हैं। उन्होंने आह्वान किया कि हम बंटेंगे नहीं, कमजोर नहीं पड़ेंगे, 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के संकल्प को मजबूत कर विकसित एवं आत्मनिर्भर भारत का सपना पूरा करेंगे।

प्रधानमंत्री ने एकता परेड के बाद मार्ग पर निकलकर उपस्थित लोगों का अभिवादन स्वीकार किया।

इस अवसर पर सांसद, विधायक और मुख्य सचिव सहित कई उच्च अधिकारी और बड़ी संख्या में नागरिक मौजूद रहे।

"राष्ट्रीय एकता दिवस" पर मंडल रेल प्रबंधक ने दिलाई रेलकर्मियों को एकता शपथ

(जीएनएस)। लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय एकता दिवस वडोदरा मंडल में हर्षोल्लास एवं उत्साहपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने रेल अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को बनाए रखने की राष्ट्रीय एकता शपथ दिलाई। उन्होंने सरदार पटेल की दूरदर्शिता, नेतृत्व क्षमता और देश की एकता को सुदृढ़ करने में उनके महान योगदान को स्मरण किया।

कार्यक्रम में वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री तेजराम मीना , विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

पश्चिम रेलवे ने स्क्रैप बिक्री में 300 करोड़ रुपये का आंकड़ा पार किया

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे ने महत्वाकांक्षी "मिशन ज़ीरो स्क्रैप" पहल के अंतर्गत अपने सभी रेलवे प्रतिष्ठानों और इकाइयों को स्क्रैप-मुक्त बनाने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की है। चालू वित्त वर्ष 2025-26 में पश्चिम रेलवे ने 29 अक्टूबर, 2025 तक कुल 302 करोड़ रुपये से अधिक की स्क्रैप बिक्री का लक्ष्य हासिल कर लिया है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, स्क्रैप बिक्री का प्रदर्शन रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित आनुपातिक लक्ष्य से लगभग 21% अधिक है। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि पिछले वर्ष की रिकॉर्ड तिथि 13 नवंबर, 2024 से दो सप्ताह पहले हासिल की गई है, जब पश्चिम रेलवे ने 300 करोड़ रुपये का आंकड़ा पार किया था।

इस उपलब्धि के साथ पश्चिम रेलवे, दक्षिण मध्य रेलवे के साथ स्क्रैप बिक्री में 300 करोड़ रुपये के क्लब में शामिल हो गया है, जिससे कुशल सामग्री प्रबंधन और संसाधन अनुकूलन में अग्रणी क्षेत्रों में से एक के रूप में इसकी स्थिति और मजबूत हो गई है।

पश्चिम रेलवे पर मनाया गया "राष्ट्रीय एकता दिवस"

(जीएनएस)। पहली तस्वीर में पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता भारत रत्न सरदार वल्लभभाई पटेल के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए। दूसरी तस्वीर में वे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता शपथ दिलाते हुए दिखाई दे रहे हैं।

भारत रत्न एवं भारत के लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में पश्चिम रेलवे पर राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता ने 31 अक्टूबर 2025 को चर्चगेट स्थित पश्चिम रेलवे मुख्यालय में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता शपथ दिलाई।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, दूरदर्शी राजनेता की 150वीं जयंती पश्चिम रेलवे के सभी छह मंडलों पर श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई गई। अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में एकता, अखंडता एवं राष्ट्र की सुरक्षा को बनाए रखने की प्रतिबद्धता दोहराते हुए राष्ट्रीय एकता शपथ ली।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल शनिवार को एकता नगर में 'भारत पर्व-2025' का उद्घाटन करेंगे

1 से 15 नवंबर तक चलने वाले भारत पर्व में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना होगी उजागर

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल एकता नगर स्थित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में शनिवार, 1 नवंबर की शाम 'भारत पर्व-2025' का उद्घाटन करेंगे। इस मौके पर उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी और पर्यटन राज्य मंत्री डॉ. जयराम गामित भी मौजूद रहेंगे।

लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती देश भर में मनाई जा रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और प्रेरणा से इस वर्ष एकता नगर में यह कार्यक्रम नई दिल्ली में होने वाले गणतंत्र दिवस के राष्ट्रीय समारोह की तरह ही भव्य तरीके से मनाया जा रहा है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत 1 से 15 नवंबर, 2025 के दौरान आयोजित होने वाले भारत पर्व में देश की 'विविधता में एकता' की संस्कृति को प्रदर्शित करने वाले अनेक सांस्कृतिक और देशभक्ति के कार्यक्रमों के माध्यम से 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को उजागर किया जाएगा।

भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय और राज्य सरकार के पर्यटन विभाग तथा युवा सेवा एवं सांस्कृतिक गतिविधियां विभाग के संयुक्त तत्वावधान में सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर एकता नगर में पहली बार भारत पर्व का आयोजन किया जा रहा है।

भारत पर्व में भारत की विभिन्न सांस्कृतिक विरासत, खान-पान परंपरा और कलात्मक कौशल का प्रदर्शन किया जाएगा। साथ ही, प्रतिदिन शाम को दो अलग-अलग राज्य अपनी अनोखी परंपराओं और कलाओं का प्रदर्शन करेंगे। 15 नवंबर को भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के उपलक्ष्य में विशेष प्रस्तुति भी दी जाएगी।

भारत पर्व के अंतर्गत जंगल सफारी के पास 45 फूड स्टॉल और एक लाइव स्टूडियो किचन का आयोजन किया गया है, जहां विभिन्न राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के व्यंजन परोसे जाएंगे।

इसके अलावा, यहां लगाए गए 55 हस्तकला स्टॉलों में भारत के विभिन्न राज्यों की रंगबिरंगी एवं नवीन हस्तकलाओं को प्रदर्शित किया जाएगा। भारत दर्शन पवेलियान में विभिन्न राज्यों के पवेलियन बनाए गए हैं, जहां उन राज्यों के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों और सांस्कृतिक विशेषताओं को दर्शाया गया है।

भावनगर रेलवे मंडल पर 'राष्ट्रीय एकता दिवस' शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

(जीएनएस)। "भारत के लौह पुरुष" सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के अवसर पर 31 अक्टूबर, 2025 को पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल पर राष्ट्रीय एकता दिवस हर्षोल्लास एवं उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मंडल कार्यालय परिसर में शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने की। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री वर्मा द्वारा उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता और अखंडता बनाए रखने की शपथ दिलाई गई। समारोह में अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हिमाँशु शर्मा की गरिमामयी उपस्थिति रही। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य कर्मचारियों में देश की एकता, अखंडता एवं सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना को सुदृढ़ करना है।

इस कार्यक्रम का सफल आयोजन वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री हुबलाल जगन के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न शाखाओं के अधिकारी एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे और सभी ने एक स्वर में देश की एकता, अखंडता और सुरक्षा बनाए रखने का संकल्प दोहराया।

अंत में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सरदार वल्लभभाई पटेल के राष्ट्र निर्माण में दिए गए अमूल्य योगदान को नमन किया तथा उनके आदर्शों और विचारों पर चलने का संकल्प लिया।

राष्ट्रीय एकता दिवस पर आयोजित एकता परेड की झलकियां

(जीएनएस)। गांधीनगर : लौह पुरुष सरदार पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर एकता नगर-स्टैच्यू ऑफ यूनिटी में राष्ट्रीय एकता दिवस का शानदार समारोह आयोजित हुआ। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरक उपस्थिति में भव्य एकता परेड निकाली गई, जिसमें विभिन्न राज्यों और सुरक्षा बलों की टुकड़ियों ने भाग लिया।

एकता दिवस समारोह की मुख्य झलकियां

- देश के विभिन्न राज्यों, केंद्रशासित प्रदेशों, सीएपीएफ और पुलिस बलों की लगभग 54 झांकियों, बैंड और ध्वजों ने अनूठा आकर्षण जमाया।
- भारत सरकार के केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय की ओर से आयोजित कार्यक्रम में शास्त्रीय नृत्यों की प्रस्तुति दी गई, जिसमें 'लौह पुरुष नमस्तुत्यम' पर 800 कलाकालों ने भारतीय शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किया।
- सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर दो हेलीकॉप्टरों द्वारा सरदार साहब की प्रतिमा पर पुष्प वर्षा कर भाववंदना की गई।
- बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित राष्ट्रीय गीत 'वंदेमातरम' की रचना के 150 वर्ष पूरे होने के अवसर पर 100 संगीतकारों ने ताशा, शहनाई और करतालों के साथ वंदेमातरम गीत की प्रस्तुति दी।
- सीआईएसएफ की महिला जवानों ने साहस और शौर्य का प्रदर्शन किया।
- सीआरपीएफ की महिला कर्मियों ने मार्शल आर्ट और निहत्थे युद्ध अभ्यास का प्रदर्शन किया। बिना हथियार वाले युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए सेवा और निष्ठा की भावना के साथ हैरतअंगेज करतब प्रस्तुत किए। जिसमें 36 पुरुष और 6 महिलाओं ने हिस्सा लिया।
- भारतीय वायु सेना के नौ विमानों सूर्य किरण टीम ने 9 विमानों के साथ एयर शो का अद्भुत प्रदर्शन किया। नौ जांबाज पायलटों की टीम ने शानदार करतब प्रस्तुत कर आकाश को देशभक्ति के रंगों से रंग दिया। टीम ने सरदार साहब को आकाशीय सलामी दी।

अहमदाबाद मंडल पर राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में "रन फॉर यूनिटी" एवं सत्यनिष्ठा की शपथ का आयोजन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल पर 31.10.2025 को राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में स्वर्गीय सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के अवसर पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर रिवरफ्रंट उस्मानपुरा से रिवरफ्रंट हाउस बिल्डिंग तक "रन फॉर यूनिटी" वॉक का आयोजन किया गया तथा मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश ने मंडल कार्यालय, अहमदाबाद परिसर में रेल अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई।

मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से भ्रष्टाचार मुक्त भारत के निर्माण हेतु "राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा" बनाए रखने, आपसी भाईचारे को सुदृढ़ करने तथा सदैव सत्यनिष्ठ बने रहने की शपथ दिलाई गई। अपने दैनिक कार्यों में ईमानदारी और पारदर्शिता के मूल्यों को अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सत्यनिष्ठा केवल कार्यस्थल तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बननी चाहिए। हमें अपने देश को एकजुट, सुरक्षित और विकसित रखने के लिए अपने दैनिक जीवन में एकता, अखंडता और राष्ट्र की सुरक्षा के सिद्धांतों को आत्मसात करना चाहिए। उन्होंने सभी से धर्म, जाति और पंथ की विविधता के बावजूद सामाजिक समरसता एवं सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखने का आग्रह किया।

लौह परुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती

गुजरात विधानसभा में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा विधानसभा अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी के करकमलों से सरदार पटेल को पुष्पांजलि अर्पित की गई

▸▸प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सरदार साहब की विश्व की सबसे ऊँची भव्य प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' का निर्माण कराकर श्रेष्ठ अंजलि अर्पित की : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸देश को सशक्त एवं मजबूत बनाने के लिए सरदार साहब का ऐक्य भाव का सपना पूर्ण करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य : विधानसभा अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी

(जीएनएस)। गांधीनगर : अखंड भारत के निर्माता तथा लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में शुक्रवार को मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने विधानसभा परिसर में सरदार साहब की प्रतिमा पर तथा विधानसभा पोडियम में स्थित उनके तैलचित्र पर भावपूर्ण पुष्पांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी सहित महानुभावों ने भी सरदार साहब को पुष्पांजलि दी।

लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के अवसर पर देशवासियों को शुभकामनाएँ देते हुए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने केवडिया स्थित एकता नगर में विश्व की सबसे ऊँची सरदार साहब की प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी (एसओयू)' का निर्माण कराकर श्रेष्ठ अंजलि अर्पित की है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से सरदार साहब की स्मृति में उनके जन्म दिवस 31 अक्टूबर को वर्ष 2014 से हम 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में मना रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने आह्वान किया कि प्रधानमंत्री के संकल्प 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' से सभी साथ मिलकर एकता के कार्यमंत्र को सिद्ध कर आगे बढ़ें।

गुजरात के सपूत, लौह पुरुष तथा अखंड भारत के शिल्पकार सरदार साहब की जयंती के उपलक्ष्य में विधानसभा अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी ने कहा कि आज की वैश्विक समस्याओं के समक्ष सरदार साहब का संदेश दुनिया के लिए ऐक्य भाव देने का है। देश को सशक्त तथा मजबूत बनाने के लिए सरदार साहब का सपना पूर्ण करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। श्री चौधरी ने राष्ट्रीय एकता दिवस पर प्रत्येक गुजराती को शुभकामनाएँ दीं। इस अवसर पर विधानसभा में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. प्रद्युमन वाजा, गांधीनगर की महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, गांधीनगर शहर संगठन अध्यक्ष श्री आशिष दवे, संगठन के पदाधिकारी, पार्षद, विधानसभा सचिव श्री सी. बी. पंड्या सहित अधिकारियों-कर्मचारियों, अग्रणियों, नगरजनों ने सरदार साहब की प्रतिमा तथा तैलचित्र को भावपूर्वक पुष्पांजलि अर्पित की।

राष्ट्रीय एकता दिवस पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद में 'यूनिटी मार्च' को प्रस्थान कराया

▸▸सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती पर अहमदाबाद महानगर पालिका द्वारा 'यूनिटी मार्च' आयोजित हुई

▸▸मुख्यमंत्री सहित महानुभावों ने 'राष्ट्रहित प्रथम' के भाव के साथ 'एकता शपथ' ली

-: मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

▸▸प्रधानमंत्री ने 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' के निर्माण के माध्यम से सरदार पटेल को सच्चे अर्थ में श्रद्धांजलि दी

▸▸'रन फॉर यूनिटी' समग्र देश को एकता के सूत्र से जोड़ने वाला माध्यम

▸▸स्वदेशी को जीवन का हिस्सा बनाकर आत्मनिर्भर भारत से विकसित भारत का निर्माण करें

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में शुक्रवार को अहमदाबाद महानगर पालिका द्वारा आयोजित 'सरदार@150 यूनिटी मार्च' को प्रस्थान कराया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा पर फूल-माला पहना कर उन्हें नमन किया।

मुख्यमंत्री ने अखंड भारत के शिल्पकार तथा लौह परुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती पर भावांजलि अर्पित की।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देशभर में सरदार पटेल के नेतृत्व में देशभर में सरदार पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में भव्यातिभव्य उत्सव का आयोजन किया गया है। प्रधानमंत्री ने विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' के निर्माण से सरदार पटेल को सच्चे अर्थ में श्रद्धांजलि दी है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरदार साहब की यह प्रतिमा भारत के सामर्थ्य एवं गौरवशाली इतिहास का श्रेष्ठ प्रतीक है।

सरदार साहब का स्मरण करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि सरदार वल्लभभाई पटेल ने स्वतंत्रता के बाद लगभग 562 देसी रजवाड़ों का विलय कर स्वतंत्र भारत का निर्माण किया था।

मुख्यमंत्री ने जोड़ा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने धारा 370 हटाकर भारत को एक और अखंड भारत बनाया है। प्रधानमंत्री ने प्रदेशों एवं राज्यों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान कर 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की रचना की है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के दिशादर्शन में वर्ष 2014 से सरदार पटेल की जयंती समग्र देश में राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाई जाती है। आज आयोजित 'यूनिटी मार्च' देश की एकता तथा अखंडता की प्रतीक है।

मुख्यमंत्री ने बलपूर्वक कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मंत्र के जरिये आज जब भारत तीसरी बड़ी आर्थिक महासत्ता बनने की ओर आगे बढ़ रहा है, तब यह 'रन फॉर यूनिटी' समग्र देश को एकता के सूत्र में जोड़ने वाला माध्यम है। उन्होंने गौरवपूर्वक कहा कि जिस तरह स्वतंत्रता आंदोलन में लोगों में स्वदेशी के लिए जोश और उत्साह जागा था, ऐसा ही जोश और उत्साह हमें इस बार दीपावली के त्योहारों में स्वदेशी वस्तुओं की खरीदारी में देखने को मिला है। मुख्यमंत्री ने सभी का आह्वान किया कि हम सभी सरदार साहब को याद कर एक और नेक बनकर, स्वदेशी को जीवन का हिस्सा बनाकर विकसित भारत का निर्माण करें।

इस अवसर पर श्री भूपेंद्र पटेल सहित महानुभावों एवं उपस्थित सभी नागरिकों ने 'राष्ट्रहित प्रथम' के भाव के साथ 'एकता शपथ' ली।

अहमदाबाद की महापौर श्रीमती प्रतिभाबेन जैन ने स्वागत संबोधन करते हुए 'यूनिटी मार्च' में सभी का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर हम सरदार साहब को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पण करने के लिए इस 'यूनिटी मार्च' में एकत्र हुए हैं। इस 'यूनिटी मार्च' से राष्ट्र भावना की नई चेतना का संचार हुआ है। श्रीमती जैन ने जोड़ा कि यह 'यूनिटी मार्च' 'मेदस्विता मुक्त गुजरात, स्वस्थ गुजरात' को सार्थक करेगी।

'राष्ट्रीय एकता दिवस' के उपलक्ष्य में अहमदाबाद महानगर पालिका द्वारा 'एक भारत, आत्मनिर्भर भारत' के संदेश को अधिक सुदृढ़ करने के लिए इस 'यूनिटी मार्च' का आयोजन किया गया था।

मुख्यमंत्री ने नारणपुरा में सरदार पटेल कॉलोनी स्थित सरदार पटेल की प्रतिमा के पास से सुबह 7.30 बजे 'यूनिटी मार्च' को प्रस्थान कराया। यह मार्च सरदार पटेल कॉलोनी से शुरु होकर सरदार पटेल स्टेडियम रोड, सी. जी. रोड होकर आश्रम रोड पर स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा के पास पूर्ण हुई।

इस 'यूनिटी मार्च' में राज्य मंत्री श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला, सांसद, शहर के सभी विधायक, उप महापौर श्री जतिन पटेल, मनपा स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री देवांग दाणी, शासक पक्ष के नेता श्री गौरांग प्रजापति, सचेतक श्रीमती शीतल डागा, मनपा आयुक्त श्री बंछानिधि पाणि, शहर पुलिस आयुक्त श्री जी. एस. मलिक, जिला कलेक्टर श्री सुजीत कुमार, जिला विकास अधिकारी श्री विदेह खरे, प्रशासन के अधिकारी, गुजरात विद्यापीठ के उप कुलपति डॉ. हर्षद पटेल, पार्षद, युवा, विद्यार्थी, खेलप्रेमी तथा बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

'कश्मीर को भारत में पूरी तरह मिलाना चाहते थे सरदार पटेल, लेकिन नेहरू ने रोका' — पीएम मोदी का नेहरू पर तीखा हमला, कहा कांग्रेस की गलती से दशकों तक झेलनी पड़ी कश्मीर की पीड़ा

(जीएनएस)। एकता नगर (गुजरात)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू पर तीखा प्रहार करते हुए कहा कि सरदार वल्लभभाई पटेल चाहते थे कि पूरा कश्मीर भारत में पूर्ण रूप से विलय हो जाए, लेकिन नेहरू ने ऐसा नहीं होने दिया। उनके इस निर्णय की वजह से कश्मीर में वर्षों तक अशांति, आतंक और खूनखराबा चलता रहा।

गुजरात के केवडिया में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में सरदार पटेल की जयंती पर आयोजित भव्य "राष्ट्रीय एकता परेड" को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि "देश की एकता और अखंडता पर राजनीतिक हितों के लिए हमला करना गुलाम मानसिकता का परिचायक है। कांग्रेस को सत्ता के साथ अंग्रेजों की मानसिकता भी विरासत में मिली। इसी गुलाम सोच ने कश्मीर जैसे मुद्दे पर देश को भारी नुकसान पहुंचाया।"

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज की युवा पीढ़ी शायद नहीं जानती कि सरदार पटेल कश्मीर के पूर्ण एकीकरण की कामना करते थे, जैसे उन्होंने हैदराबाद, जूनागढ़ और 550 से अधिक रियासतों का विलय कर भारत को अखंड बनाया था। लेकिन नेहरू ने उस समय अपनी नीतियों और हस्तक्षेप से पटेल को रोक दिया, जिसके परिणामस्वरूप जम्मू-कश्मीर का एक हिस्सा अलग संविधान, अलग प्रतीक और विशेष दर्जे के साथ भारत के शेष भाग से अलग हो गया। उन्होंने कहा कि "उस गलती ने दशकों तक देश को पीड़ा दी, निर्दोष लोगों का खून बहा, आतंकवाद पनपा और पाकिस्तान को वहां हस्तक्षेप का अवसर मिला।"

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि "कांग्रेस की कमजोर नीतियों और निर्णयों के कारण कश्मीर का एक बड़ा हिस्सा पाकिस्तान के अवैध कब्जे में चला गया, जो आगे चलकर आतंकवाद का अड्डा बन गया। कश्मीर और देश दोनों ने इसकी भारी कीमत चुकाई, पर कांग्रेस ने कभी उस ऐतिहासिक भूल से सबक नहीं लिया। कांग्रेस सरदार पटेल के दृष्टिकोण को भुला चुकी थी, लेकिन हम उसे नहीं भूलेंगे।"

प्रधानमंत्री ने कहा कि 2014 के बाद देश ने एक बार फिर सरदार पटेल के दृष्टिकोण पर आधारित दृढ़ नेतृत्व देखा। "आज अनुच्छेद 370 का अंत हो चुका है, कश्मीर अब बेड़ियों से मुक्त है और भारत के साथ पूर्ण रूप से एकीकृत है। इस कदम ने पाकिस्तान और आतंकवाद के साजिशकर्ताओं को यह समझा दिया कि यह सरदार पटेल का भारत है, जो अपने हितों और सम्मान की रक्षा के लिए किसी भी हद तक जा सकता है।"

उन्होंने कहा कि "ऑपरेशन सिंदूर" जैसी कार्रवाइयों से दुनिया ने देख लिया कि नया भारत अब किसी को चेतावनी नहीं देता, बल्कि अगर चुनौती दी जाए तो दुश्मन के घर में घुसकर जवाब देता है।

प्रधानमंत्री ने आगे कहा कि पटेल के बाद की सरकारों ने देश की संप्रभुता को उतनी गंभीरता से नहीं लिया, जितनी लेनी चाहिए थी। इसका परिणाम नक्सलवाद, माओवादी हिंसा और पूर्वोत्तर में अस्थिरता के रूप में सामने आया। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस सरकारों ने वोट बैंक की राजनीति के लिए देश की सुरक्षा से समझौता किया और घुसपैठ जैसे गंभीर मुद्दे पर आंखें मूंद लीं।

मोदी ने कहा कि अवैध घुसपैठिए देश के संसाधनों पर कब्जा कर रहे हैं और भारत के जनसांख्यिकीय संतुलन को बिगाड़ रहे हैं। "वोट बैंक के लालच में पिछली सरकारों ने इन घुसपैठियों को संरक्षण दिया, जिससे देश की एकता और सुरक्षा पर खतरा बढ़ गया। लेकिन अब भारत ने फैसला किया है कि अपनी धरती पर किसी भी अवैध घुसपैठिए को नहीं रहने देगा।"

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत की एकता चार स्तंभों पर टिकी है — सांस्कृतिक एकता, भाषाई सम्मान, भेदभाव रहित विकास और मजबूत कनेक्टिविटी। उन्होंने कहा, "भारत की हर भाषा राष्ट्रीय भाषा है। किसी एक भाषा को दूसरों पर थोपने का कभी प्रयास नहीं किया गया। हमारी विविधता ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है।"

मोदी ने कांग्रेस पर आरोप लगाया कि उसने न केवल सरदार पटेल, बल्कि डॉ. भीमराव आंबेडकर, कर्पूरी ठाकुर और जयप्रकाश नारायण जैसे महान नेताओं की भी उपेक्षा की। "एक परिवार और एक पार्टी की सत्ता बचाने के लिए इन नेताओं के योगदान को भुला दिया गया। आरएसएस और राष्ट्रवादी विचारों के खिलाफ षड्यंत्र रचे गए। यह राजनीति नहीं, बल्कि विचारों की हत्या थी।"

उन्होंने कांग्रेस पर वंदे मातरम के एक अंश को धार्मिक कारणों से हटाने का आरोप लगाते हुए कहा, "जिस दिन कांग्रेस ने वंदे मातरम को तोड़ा, उसी दिन भारत के विभाजन की नींव रख दी गई थी। अगर उस समय वह गलती न होती, तो आज भारत की तस्वीर बिल्कुल अलग होती।"

प्रधानमंत्री ने अंत में कहा कि "सरदार पटेल ने जिस अखंड भारत का सपना देखा था, आज वह धीरे-धीरे साकार हो रहा है। देश का हर नागरिक अब यह महसूस कर रहा है कि यह वही लौह पुरुष का भारत है — जो एकजुट है, मजबूत है, और अपने संकल्प के आगे किसी भी ताकत को झुकने नहीं देता।"

जूनागढ़ परिक्रमा मेला के दौरान यात्रियों की सुविधा हेतु जूनागढ़-राजकोट के बीच चलेगी स्पेशल ट्रेन

(जीएनएस)। जूनागढ़ में लगने वाले परिक्रमा मेले के दरमियान होने वाली यात्रियों की भीड़ को ध्यान में रखकर पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा के लिए जूनागढ़-राजकोट के बीच "मेला स्पेशल" ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार इस ट्रेन का विस्तृत विवरण इस प्रकार हैः ट्रेन नंबर 09221 राजकोट-जूनागढ़ स्पेशल ट्रेन राजकोट स्टेशन से 00.05 बजे प्रस्थान करेगी तथा 02.40 बजे जूनागढ़ पहुंचेगी। इसी प्रकार वापसी में ट्रेन नंबर 09222 जूनागढ़-राजकोट स्पेशल ट्रेन जूनागढ़ से 03.35 बजे प्रस्थान करेगी तथा 07.05 बजे राजकोट पहुंचेगी।

उपरोक्त दोनों ट्रेनें मार्ग में भक्तिनगर, गोंडल, वीरपुर, नवागढ़, जेतलसर और वडाल स्टेशनों पर दोनों दिशाओं में रूकेगी।

उल्लेखनीय है कि उपरोक्त दोनों ट्रेनें पूर्णतः अनारक्षित ट्रेन के रूप में चलेंगी। उपरोक्त दोनों ट्रेनें अपने निर्धारित समयानुसार 01.11.2025 से 10.11.2024 तक (04.11.2025 और 07.11.2025 को छोड़कर) प्रतिदिन चलेंगी।

इस ट्रेन के ठहराव, संरचना और समय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की गरिमामय उपस्थिति में विभिन्न कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया गया

(जीएनएस)। गांधीनगर : राष्ट्रीय एकता दिवस के पावन अवसर पर शुक्रवार को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की गरिमामय उपस्थिति में एकता नगर के परेड ग्राउंड में अनेक आकर्षक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें गुजरात पुलिस तथा सीआरपीएफ की महिला कर्मचारियों द्वारा संयुक्त वेपन ड्रिल का निदर्शन, सीआईएसएफ द्वारा पारंपरिक युद्ध कला प्रदर्शन, असम पुलिस द्वारा मोटर साइकिल डेयर डेविल शो, सीआरपीएफ द्वारा शस्त्र रहित संघर्ष (यूएसी) का प्रदर्शन, बीएसएफ द्वारा डॉग शो और एनसीसी द्वारा 'वल्लभभाई सरदार हमारे' विषय पर आधारित विशेष प्रदर्शन, विभिन्न बलों द्वारा कौशल, शक्ति एवं अनुशासन के अद्भुत प्रदर्शन ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

गुजरात में पुलिस की बड़ी कार्रवाई — अहमदाबाद से पकड़ी गईं 17 बांग्लादेशी महिलाएं, अवैध रूप से रह रहीं थीं किराए के मकानों में

(जीएनएस)। अहमदाबाद। गुजरात पुलिस ने शुक्रवार को एक बड़ी कार्रवाई करते हुए अहमदाबाद के सोला इलाके से 17 बांग्लादेशी महिलाओं को हिरासत में लिया है। पुलिस के अनुसार, ये महिलाएं फर्जी पहचान के सहारे भारत में अवैध रूप से रह रही थीं और मजदूरी के नाम पर शहर के अलग-अलग इलाकों में ठिकाने बना चुकी थीं। सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी) एच.एम. कंसागरा ने बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि कुछ विदेशी नागरिक बिना वैध दस्तावेजों के सोला और आसपास के क्षेत्रों में रह रहे हैं। सूचना के आधार पर पुलिस ने गुरुवार देर रात विशेष अभियान चलाया और चार से पांच ठिकानों पर एकसाथ छापेमारी की। छापों में 17 महिलाओं को हिरासत में लिया गया, जिनकी उम्र 21 से 49 वर्ष के बीच बताई जा रही है। पुलिस अधिकारियों के मुताबिक, प्रारंभिक पूछताछ में महिलाओं ने खुद को दैनिक मजदूर बताया है, लेकिन जांच एजेंसियों को शक है कि इनमें से कुछ महिलाएं देह व्यापार के नेटवर्क से भी जुड़ी हो सकती हैं। पुलिस ने उनके पास से मिले पहचान पत्रों और दस्तावेजों की जांच की, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि वे बांग्लादेश की नागरिक हैं और अवैध रूप से भारत में प्रवेश कर चुकी हैं। एसीपी कंसागरा ने कहा कि "ये सभी महिलाएं एजेंटों के माध्यम से अवैध रूप से सीमा पार करके भारत में दाखिल हुई थीं। ये एजेंट बांग्लादेश और पश्चिम बंगाल के सीमावर्ती इलाकों में सक्रिय हैं और नकली पहचान पत्र तैयार करवाकर लोगों को मजदूरी या घरेलू काम के बहाने गुजरात, महाराष्ट्र और दिल्ली जैसे राज्यों में भेजते हैं।"

अहमदाबाद में जैन समाज की एकता पर हुआ ऐतिहासिक चिंतन, जिसो टीम की आनंदजी कल्याणजी ट्रस्ट अध्यक्ष समवेगलालभाई से प्रेरक भेंट

(जीएनएस)। अहमदाबाद। दिवाली और नववर्ष के पावन अवसर पर जैन समाज में एकता और सेवा की भावना को सशक्त करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम उठाया गया। जैन इंटरनेशनल सेवा ऑर्गेनाइजेशन (जिसो) की टीम ने आनंदजी कल्याणजी ट्रस्ट के अध्यक्ष और "शासन रत्न" से सम्मानित श्री समवेगलालभाई से विशेष भेंट की। यह मुलाकात न केवल आत्मीय संवाद का माध्यम बनी बल्कि जैन समाज के भविष्य की दिशा तय करने वाली प्रेरणादायी चर्चा के रूप में उभरी। बैठक में जिसो के फ़ाउंडर चेयरमैन श्री सुरेश पुनामिया और राष्ट्रीय प्रचार मंत्री श्री प्रशांत जवेरी उपस्थित रहे। इस अवसर पर "जैन एकता" जैसे गहन और समयानुकूल विषय पर विचार-विमर्श हुआ। समवेगलालभाई ने भावपूर्ण शब्दों में कहा — "अब समय आ गया है कि जैन समाज के सभी संप्रदाय, चाहे वे दिगंबर हों, श्वेतांबर, तेरापंथी या स्थानकवासी — सब एक सूत्र में बंधकर 'जैन एकता' को आंदोलन और मिशन के रूप में आगे बढ़ाएँ। यदि यह एकता अभी नहीं हुई, तो भविष्य में समाज को इसके गंभीर परिणाम झेलने पड़ सकते हैं।" उनके इन ओजस्वी विचारों से प्रभावित होकर श्री सुरेश पुनामिया ने आश्वासन दिया कि "जिसो परिवार इस पवित्र मिशन को अपने वैश्विक डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का कार्य करेगा। 'जैन एकता ही जिसो का मिशन' बनकर समाज के प्रत्येक वर्ग को जोड़ने का संकल्प लिया जाएगा।" इस प्रेरक बैठक के दौरान जिसो टीम ने समवेगलालभाई का स्नेहपूर्वक सम्मान किया, जिसे उन्होंने अत्यंत आत्मीयता से स्वीकार करते हुए जिसो परिवार को आशीर्वाद प्रदान किया। उन्होंने कहा कि "सेवा, एकता और सद्भाव ही जैन समाज की सबसे बड़ी ताकत हैं, इन्हें डिजिटल युग में नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने की आवश्यकता है।" इस अवसर पर जिसो टीम ने "डिजिटल जैन एकता" के रूप में एक नया संकल्प लिया। इस पहल के अंतर्गत जैन समाज के चार प्रमुख स्तंभ — जैन संत, जैन संघ, जैन संस्थाएँ और जैन श्रावक — को एक ही मंच पर लाकर विश्वभर में बसे जैन समुदाय को एक सूत्र में बाँधने का लक्ष्य रखा गया है। कार्यक्रम के समापन पर यह घोषणा की गई कि जल्द ही विश्व जैन जनगणना अभियान की शुरुआत होगी, जो जैन समाज की पहचान और उपस्थिति को एक सशक्त डिजिटल रूप देगा। जैन समाज के लिए यह भेंट एक ऐतिहासिक क्षण बनकर उभरी, जहाँ सेवा, एकता और आध्यात्मिकता का संगम एक नई दिशा देता दिखाई दिया। जिसो ने आमंत्रण दिया कि समाज का हर व्यक्ति इस अभियान से जुड़े और व्हाट्सएप पर "Hi" भेजकर निःशुल्क "जैन माइनॉरिटी कार्ड" प्राप्त करे — ताकि जैन एकता का यह दीप हर घर और हर हृदय तक पहुँच सके।

पहली बार एकता नगर में दिल्ली के गणतंत्र दिवस समारोह की तर्ज पर टैब्लो प्रस्तुत किए गए

▸▸एकता नगर में 'एकत्व' की थीम पर गुजरात सहित 8 राज्यों के तथा एनएसजी एवं एनडीआरएफ के कुल 10 टैब्लो प्रस्तुत किए गए

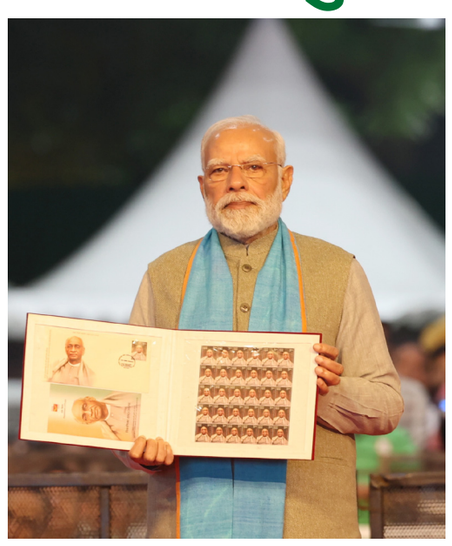

(जीएनएस)। गांधीनगर, 31 अक्टूबर : भारत की एकता व अस्मिता के शिल्पकार तथा लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में शुक्रवार को विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के सान्निध्य में दिल्ली में 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस पर होने वाले भव्य समारोह की तर्ज पर इस वर्ष एकता नगर में पहली बार सशस्त्र बल एवं विभिन्न राज्यों द्वारा अपनी विशिष्ट उपलब्धियों को दर्शाने वाले टैब्लो प्रस्तुत किए गए।

इन टैब्लो में 'एकत्व' की थीम पर एनएसजी, एनडीआरएफ, अंडमान व निकोबार, छत्तीसगढ़, गुजरात, जम्मू एवं कश्मीर, महाराष्ट्र, मणिपुर, पुडुचेरी तथा उत्तराखंड के कुल 10 टैब्लो प्रस्तुत किए गए।

गुजरात का टैब्लो : अखंड भारत की गाथा

एकता नगर में आयोजित टैब्लो परेड में गुजरात सरकार द्वारा तैयार किया गया और अखंड भारत के निर्माण में सरदार साहब के अमूल्य योगदान को उजागर करने वाला टैब्लो लोगों के आकर्षण का केन्द्र बना।

गुजरात के टैब्लो के मुख्य भाग में देश के उस ऐतिहासिक क्षण को दर्शाया गया, जब सरदार साहब ने महाराजा कृष्णकुमारसिंहजी के करकमलों से भावनगर स्टेट का भारतीय गणराज्य में विलय करवा कर देश की एकता के मिशन की सुदृढ़ नींव डाली थी।

टैब्लो में सरदार साहब की दृढ़ निर्णय शक्ति के प्रतीक समान सोमनाथ मंदिर के अलावा कच्छ के भूकंप के शहीदों की स्मृति में निर्मित भुज स्थित स्मृति वन को भी उचित स्थान दिया गया है, जो गुजरात के शौर्य एवं दृढ़ता का प्रतीक भी है। इसके अलावा, गुजरात राज्य की कपड़ा एवं हीरा उद्योग जैसी स्थानीय इकाइयों की झलक दर्शाकर राज्य की आर्थिक प्रगति को भी झाँकी द्वारा प्रस्तुत किया गया।